आज़ादी का
अमृत महोत्सव

इरेडा
IREDA

अक्षय क्रांति

हिंदी को आगे बढ़ाना है,
उन्नति का राह ले जाना है।
केवल एक दिन ही नहीं,
हमने नित हिंदी दिवस मनाना है।

हिंदी दिवस की शुभकामनाएं

इरेडा
IREDA

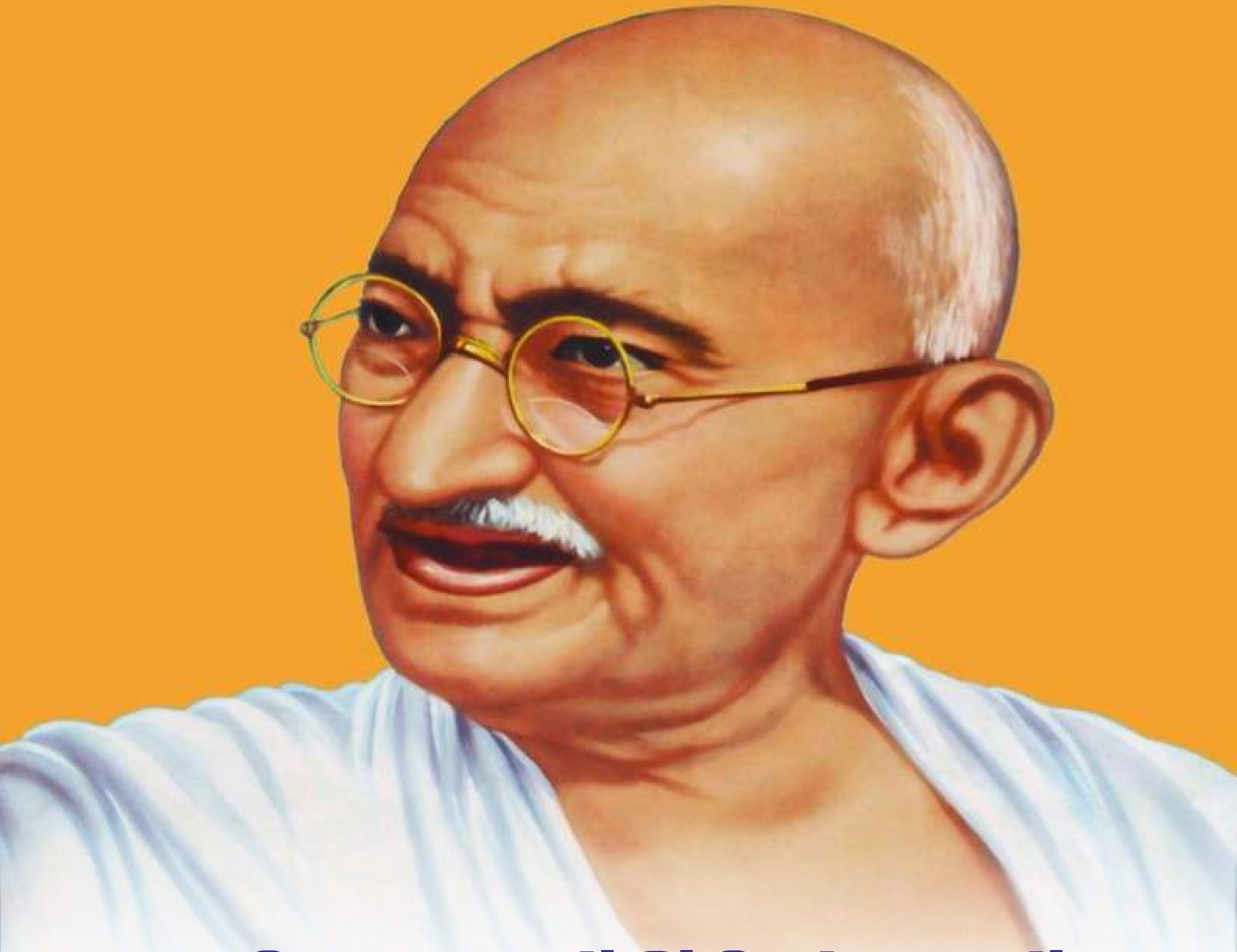

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है ।

महात्मा गांधी

हिंदी दिवस
14 सितम्बर

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री प्रदीप कुमार दास

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता

डॉ. पी. श्रीनिवासन

महाप्रबंधक (मा.सं.- नीति एवं रणनीति गतिविधि)

संपादक

श्री नरेश वर्मा

उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन - प्रशासन)

सहसंपादक

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

विशेष सहयोग

श्री आलर कुल्लू, सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

श्रीमती शशि बाला पपनैं, सहायक प्रबंधक (जनरल)

सुश्री तुलसी, वरि. निजी सचिव

इरेडा
IREDA

नरेन्द्र मोदी (प्रधान मंत्री)

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता
अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है।
हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

हिंदी दिवस
14 सितम्बर

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	रचना वर्ग	लेख/रचयिता श्री / सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश		अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	1-3
2.	राजभाषा कार्यान्वियन, क्या करें और क्या न करें			4
3.	इरेडा का मिशन	-	-	5
4.	आत्मविश्वास	लेख	डॉ. पी. श्रीनिवासन	6-7
5.	पर्यावरण	लेख	संगीता श्रीवास्तव	8-11
6.	सर्वनिंदक महाराज	लेख	नरेश वर्मा	12-13
7.	मानसिक तनाव से मुक्ति के उपाय	लेख	डॉ. प्रसून कुमार झा	14-16
8.	करोना का जीवाणु (स्वरचित)	कविता	जयश्री सबनानी	17
9.	शब्दों के शहर में	कविता	प्रतीक साव	18-19
10.	आओ पेड़ बन जाए हम	कविता	आकांक्षा जी खोड़ा	20
11.	मन करता है	कविता	डॉ. हीरा मीणा	21
12.	हिंदी इतनी समर्थ, फिर क्यों असमर्थ	लेख	डॉ. गौतम कुमार मीणा	22-27
13.	हाइड्रोजन	लेख	पीयूष अग्रवाल	28-30
14.	अभी बाकी है	कविता	रोमेश कुमार गुप्ता	31
15.	जिंदगी को नजदीक से देखिए	कविता	शशि गुप्ता	32
16.	ढाई अक्षर	कविता	गिरिश चन्द्रा शर्मा	33
17.	माँ तुझे सलाम	कविता	जितेन्द्र मिश्रा	34
18.	मदुरै- रामेश्वरम अध्ययन यात्रा की यादगार लम्हें	संस्मरण	आलर कुल्लू	35-37
19.	भारत माता की बेटी	कविता	सुश्री तुलसी	38
20.	पुष्प की अभिलाषा	कविता	हजारी लाल	39
	इरेडा कर्मियों द्वारा हिंदी पखवाड़ा के दौरान 'हिंदी भाषा' पर लिखी गई स्वरचित कविता	-	-	
21.	हिंदी भाषा	कविता	मनीष चन्द्र	41
22.	हिंदी भाषा	कविता	कुमार सूरज	42
23.	हिंदी है मेरी भाषा	कविता	अंकित द्विवेदी	43
24.	हिंदी भाषा	कविता	संजय कुमार आर्य	44
25.	हिंदी भाषा	कविता	उमेश कुमार यादव	45
26.	हिंदी	कविता	आशीष अग्रवाल	46
27.	हिंदी भाषा	कविता	दिव्यांशु दुबे	47
28.	हिंदी भाषा	कविता	जोगिन्द्र कौर	48
29.	हिंदी पखवाड़ा, 2020 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों की सूची	-	-	49-50
30.	वर्ष 2020 -21 के दौरान इरेडा में राजभाषा गतिविधियां	-	-	51-55

हिंदी दिवस

के अवसर पर
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

14 सितम्बर, 2021

इरेडा
IREDA

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

Indian Renewable Energy Development Agency Limited

(A Government of India Enterprise)

शाश्वत ऊर्जा

ENERGY FOR EVER

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर मेरी शुभकामनाएं।

इरेडा परिवार के मेरे प्रिय साथियों,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सबको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

भाषा का महत्व और सार्थकता इसी में है कि हम कितने सरल एवं आत्मीयता के साथ अपने भाव और विचार दूसरों तक संप्रेषित कर सकते हैं। हिंदी भाषा सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाती है और इस भाषा की खासियत यह है कि हिंदी केवल संप्रेषण का ही काम नहीं करती अपितु प्रेम एवं भाईचारा तथा राष्ट्रीयता को भी संस्कारित करती है। अपनी इस विशेषता के कारण 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया ।उसी दिन से ही स्वाधीन भारत के इतिहास में हिंदी को विशेष गरिमा एवं गौरव प्राप्त हुआ तथा सभी सरकारी कार्यालयों में इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इरेडा के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपेक्षा है कि अपना कार्यालयी काम हिंदी में करने के उत्तरदायित्व को पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ निर्वाह करें। इससे न केवल हम अपने संवैधानिक दायित्व का पालन करेंगे अपितु राष्ट्र के प्रति सम्मान तथा राष्ट्रीय एकता को भी मजबूती प्रदान करेंगे ।

भारत जैसे बहुभाषी देश में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी सफल भूमिका निभाती रही है। हिंदी को बोलचाल की भाषा के साथ-साथ कामकाज और कारोबार की भाषा का दर्जा दिलाने के लिए हम सबको हर संभव प्रयास करना होगा। सरकारी कामकाज में प्रचलित आम बोलचाल के हिंदी शब्दों का प्रयोग किए जाने से हिंदी भाषा की स्थिति और सुदृढ़ होगी। हिंदी में काम करते वक्त यह सुनिश्चित करना होगा कि भाषा को सरल एवं सहज रूप में लिखा जाए ताकि यह आसानी से समझी जा सके तथा अपनाई जा सके ।

राजभाषा विभाग; गृह मंत्रालय द्वारा हर वर्ष वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है । वर्ष 2021 -22 के लिए वार्षिक कार्यक्रम प्राप्त हुआ है जिसमें 'क','ख' क्षेत्रों को शत प्रतिशत मूल पत्र एवं 'ग' क्षेत्र को 65% मूल पत्र हिंदी में भेजने का लक्ष्य रखा गया है । हम लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर है तथापि लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें और अधिक प्रतिबद्धता दर्शानी होगी । हिंदी में प्रारूप तैयार कर एवं हिंदी में नोटशीट प्रस्तुत कर दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बनना होगा, तभी हम लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

इरेडा में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सितम्बर, 2021 माह में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कोविड–19 को ध्यान में रखते हुए मनाने का निर्णय लिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि हम राजभाषा के प्रति अपने कर्त्तव्य हेतु सजग एवं प्रेरित हों तथा अपनी इच्छा–शक्ति एवं संकल्प शक्ति से कार्यालयी कामकाज हिंदी में करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा लें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वर्षभर सभी अधिकारी और कर्मचारी अपना संपूर्ण कामकाज हिंदी में करके अपनी दृढ़ इच्छा–शक्ति का परिचय देंगे तभी इस आयोजन का उद्देश्य पूरा होगा। सभी इरेडा कर्मियों के लिए हिंदी पखवाड़े के दौरान 'हास्य कवि गोष्ठी' का भी आयोजन किया गया।

अतः हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं इरेडा के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को पुनः बधाई देता हूँ । आइए, हम सब सरल, बोलचाल के शब्दों व अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को आत्मसात करते हुए हिंदी में काम करने का संकल्प लें ।

जय हिंद!

प्रदीप

नई दिल्ली
दिनांक 14-09-2021

प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

राजभाषा कार्यान्वयन

क्या करें और क्या न करें / Do's & Don'ts

क्या करें	Do's
सुनिश्चित करें कि सभी सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञाप्तियां, लाइसेंस, परमिट, नोटिस एवं निविदाएं आदि दस्तावेज राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुपालन में अनिवार्य रूप से द्विभाषी में जारी किए जा रहे हैं ।	Ensure that all documents like; General Orders, Rules, Notifications, Press Communiques, Licenses, Permits, Notice and Forms of Tenders are issued in bilingual in due compliance of Section 3 (3) of Official Language Act 1963.
फाइलों पर टिप्पणियां हिंदी में लिखें ।	Write notings on files in Hindi.
हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दें ।	Letter received in Hindi must be replied to in Hindi.
हिंदी में प्रेषित पत्रों पर हिंदी में ही हस्ताक्षर करें ।	Signature on Hindi letters must be in Hindi.
कार्यालयी पत्राचार में हिंदी में ही हस्ताक्षर करें ।	Put your signature in Hindi in Official correspondences.
हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान न रखने वाले कर्मचारियों को हिंदी प्रशिक्षण के लिए नामित करें ।	Nominate the employees for Hindi Training, who do not possess working knowledge of Hindi.
अपने विभाग के सभी साइन बोर्ड, बैनर, नाम पट्ट, विजिटिंग कार्ड, मोहरें आदि द्विभाषी (हिंदी, अंग्रेजी के क्रम में) तैयार कराएं ।	Prepare all Sign Boards, Banners, Name Plates, Visiting Cards, Rubber Stamps etc. of your department in bilingual (in order of Hindi & English)
सभी अग्रेषण पत्र, पावती, अनुस्मारक तथा अन्य छोटे-छोटे पत्र आवश्यक रूप से द्विभाषी में भेजें ।	All forwarding letters, acknowledgement, reminders and other small letters must be sent in bilingual.
सभी बैठकों में बातचीत/वार्तालाप हिंदी में करें ।	Discussion/Conversation in all meeting should be in Hindi.
हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं प्रतियोगिताओं में उत्साह पूर्वक भाग लें और अन्य सहकर्मियों को भी इनमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें	Participate enthusiastically in all Hindi Training Programmes, workshop & Competitions and encourage other colleagues for participation.
क्या न करें	**Don'ts**
किसी भी प्रकार के स्टेशनरी की छपाई केवल अंग्रेजी में न कराएं ।	Don't get printed any stationary in English Only.
हिंदी में प्राप्त या हिंदी में हस्ताक्षरित पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में न दें ।	Don't reply any letter in English received in Hindi or signed in Hindi.
कोई भी रबड़ की मोहर तथा विजिटिंग कार्ड केवल अंग्रेजी में न तैयार कराएं ।	Don't get printed the Rubber Stamps & Visiting Cards in English only.
सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने वाले कर्मचारियों को हतोत्साहित न करें ।	Don't Discourage the employees doing official work in Hindi

"हिंदी राष्ट्रीय एकता की कड़ी है।"
– डॉ. जाकिर हुसैन

इरेडा का मिशन

''स्थायी विकास के लिए अक्षय स्रोतों द्वारा ऊर्जा उत्पाादन, ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में आत्म निर्भर निवेश को प्रोत्साहित व वित्तापोषित करने वाली एक अग्रणी, प्रतिभागियों की हितैषी एवं प्रतियोगी संस्था के रूप में बने रहना।''

इरेडा के मुख्य उद्देश्य

क. नए एवं अक्षय स्रोतों के जरिए विद्युत और / या ऊर्जा का उत्पादन करने और ऊर्जा दक्षता के माध्यम से ऊर्जा का संरक्षण करने के लिए विशिष्ट परियोजना एवं योजना को वित्तीय सहायता प्रदान करना।

ख. अक्षय ऊर्जा एवं ऊर्जा दक्षता/संरक्षण परियोजनाओं में दक्ष एवं प्रभावी वित्तपोषण प्रदान करने के लिए अग्रणी संगठन के रूप में अपनी स्थिति को बनाए रखना।

ग. अभिनव वित्तसपोषण द्वारा अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में इरेडा की हिस्सेदारी बढ़ाना।

घ. प्रणालियों, प्रक्रियाओं एवं संस्थानों में निरंतर सुधार के जरिए ग्राहकों को प्रदान की गई सेवाओं की दक्षता में सुधार करना।

ङ. ग्राहक संतुष्टि के माध्यम से प्रतियोगी संस्थान बनने का प्रयास करना।

गुणवत्ता नीति

इरेडा अपने उपभोक्ताओं को पूर्ण संतुष्टि एवं पारदर्शिता प्रदान करने के लिए दक्ष प्रणाली एवं प्रक्रियाओं के जरिए अक्षय ऊर्जा एवं ऊर्जा दक्षता/संरक्षण में अभिनव वित्त पोषण प्रदान करने के लिए एक अग्रणी संगठन के रूप में अपनी स्थिति कायम रखने के लिए प्रतिबद्ध है।
इरेडा गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के जरिए अपने उपभोक्ताओं को दी जाने वाली सेवाओं के गुणवत्ता में लगातार सुधार के लिए प्रयास करेगी।

गुणवत्ता उद्देश्य

क. - उपभोगता की पूर्ण संतुष्टि के लिए प्रयास करना।

ख. - क्षमता में निरंतर उन्नयन और कर्मचारियों के पेशेवर कौशलों में सुधार।

ग. - उपभोक्ताओं को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की दक्षता में सुधार।

घ. - प्रणालियों, प्रक्रियाओं एवं सेवाओं में निरंतर सुधार।

डॉ. पी0 श्रीनिवासन
महाप्रबंधक (मा.सं.– नीति एवं रणनीति गतिविधि), इरेडा

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास **(self-confidence)** वस्तुतः एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। आत्मविश्वास से ही विचारो की स्वाधीनता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सरलता और सफलता मिलती है।... जो व्यक्ति आत्म विश्वास से ओत-प्रोत है, उसे अपने भविष्य के प्रति किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहती।

आत्म-विश्वास मनुष्य का स्वयं पर विश्वास है। आप जितने अधिक आश्वस्त होंगे, उतना ही अधिक आप अपने अंदर की आवाज को शांत करने में सक्षम होंगे जो कहती है, "मैं यह नहीं कर सकता।" आप अपने विचारों से अलग हो सकेंगे और अपने मूल्यों के अनुरूप कार्रवाई कर सकेंगे।

हर किसी के पास ताकत और प्रतिभा है आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए किसी से तुलना किए बिना खुद की उपलब्धि को देखना चाहिए..सकारात्मक सोच से लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। इसके लिए कोई शौक भी विकसित कर सकता है, जिससे मदद भी मिलेगी। खुद से प्यार करें, पर खुद पर शक नहीं करना चाहिए।

इसको बेहतर ढंग से समझने के लिए, हम एक कहानी देख सकते हैं, जहां आत्मविश्वास चमत्कार कर रहा है। थॉमस अल्वा एडिसन बहुत विद्याभ्यासी नहीं थे। स्कूल टीचर ने उसे छोड़ दिया। दरअसल, स्कूल टीचर ने उसकी मां को लिखित में दिया था कि उसे स्कूल भेजने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह सीखने लायक नहीं है। लेकिन उसकी माँ ने उसे पत्र नहीं दिखाया। बल्कि उसे बताया कि उसके शिक्षक उसकी बुद्धिमत्ता की सराहना करते हैं,अतःउसके उसे स्कूल जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके बाद वह उसे घर पर पढ़ाने लगी। 21 साल की उम्र में, एडिसन ने अपने पहले आविष्कार, एक इलेक्ट्रिक वोटिंग मशीन का पेटेंट कराया। दरअसल, एडिसन ने हर पांच दिनों में औसतन एक नया पेटेंट हासिल किया। एडिसन ने दीप्त प्रकाश बल्ब, फोटोग्राफ, एंव मचलचित्र का आविष्कार किया। जब वह अपनी उपलब्धियों के बाद अपने घर आया, तो वह अपने स्कूल शिक्षक द्वारा लिखे गए पत्र की तलाश में था। उसे आश्चर्य हुआ की उस पत्र में कुछ और लिखा था। अगर उनकी मां ने पत्र में क्या लिखा है यह बताया होता तो, उसमें यह आत्मविश्वास विकसित नहीं होता,और दुनिया ने एक बेहतरीन वैज्ञानिक को खो दिया होता।

एक अन्य कहानी में भी हम देख रहे है कि विश्वास किस प्रकार रचित व्यवहार को सुगम बना रहा है।

एक जहाज में करीब २०० लोग नौकायन कर रहे थे, जो लंदन से न्यूयार्क जा रहा था। प्रोफेसर विजय २०० में से एक थे। अचानक, जलवायु परिवर्तन के बारे में घोषणा की गई और लोग उग्रता के कारण घबरा गए। प्रो. विजय ने एक महिला को छोड़कर अपने आस-पास के सभी लोगों के चेहरे पर दहशत---- कुछ ही देर में समुद्र ने जहाज को हवा में उछाल दिया फिर से, विजय ने देखा कि उस महिला को छोड़ कर सभी यात्री घबरा गए थे। वह बिना किसी तनाव के शांत और रचनाशील थी। अंत में, जब जहाज न्यूयार्क पहुंचा, तो विजय महिला के पास पहुंचा और पूछा कि वह बिना किसी डर के कैसे शांत रह सकती है। महिला ने उत्तर दिया कि, उसका पति उस जहाज में नाविक है, और वह गंतव्य पर सुरक्षित आगमन के बार में निश्चित थी।

महाभारत में युधिष्ठिर, दुर्योधन के साथ पासा खेलते हुए विवेक, धर्मनिष्ठा, प्रसिद्धि और समृद्धि को त्यागने के लिए तैयार थे। हालांकि, वह आत्म-विश्वास छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। क्योंकि आत्मविश्वास नकारात्मक विचारों, निडरता को दूर करता है और किसी के आराम क्षेत्र से बाहर जोखिम के लिए तैयार रहता है।

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

पर्यावरण

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों पर और आवरण से मिलकर बना है, जिसमें परि का मतलब है हमारे आसपास अर्थात जो हमारे चारों ओर है, और "आवरण" जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है।

सामान्य अर्थों में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं से मिलकर बनी इकाई है। यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी पर निर्भर करती और संपादित होती हैं। मनुष्यों द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियाएं पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। इस प्रकार किसी जीव और पर्यावरण के बीच का संबंध भी होता है, जो कि अन्योन्याश्रित है।

मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बांटा जा सकता है, जिसमें पहला है प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण। यह विभाजन प्राकृतिक प्रक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता के अनुसार है।

हालांकि आधुनिक सभ्यता की उन्नति ने हमारे ग्रह के प्राकृतिक संसाधनों पर बहुत प्रभाव डाला है इसलिए आज प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है ।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने का एक तरीका है रीसाइक्लिंग की प्रक्रिया । इसके माध्यम से प्रकृति और संसाधनों का संरक्षण हो सकता है । कई उत्पाद जैसे पेपर, कप, कार्डबोर्ड और लिफाफे पेड़ों से बनते हैं । इन उत्पादकों को रीसाइक्लिरग करके आप १ वर्ष में कई लाख पेड़ों को बचा सकते हैं । यह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए बढ़िया तरीका है । भविष्य में इन संसाधनों को अच्छी तरह से स्थापित करने के लिए सतत वनों की प्रथा महत्वपूर्ण है । वनों का रोपण सिर्फ प्राकृतिक तरीकों से ही हो सकता है । ये मनुष्य की क्षमताओं में नहीं हैं । इसके लिए जंगल में स्वाभाविक रूप से क्षरण के लिए पेड़ तैयार करना ताकि उनके बीजों, पत्तियों एवं तनों से नए वृक्षों का निर्माण हो सके । यह 'डेडवुड' मिट्टी को तैयार करता है और अन्य तरीकों से प्राकृतिक पुनर्जनन में सहायक होता है ।

हमें जीवाश्म ईंधन के संरक्षण की आवश्यकता है, हालांकि हमारे जीवाश्म ईंधन के उपयोग को सीमित करने के अन्य कारण भी हमें तलाशने होंगे, क्योंकि ये ईधन वायु प्रदूषित करते हैं । जीवाश्म ईंधन को ग्लोबल वार्मिंग हमारे पारिस्थितिक तंत्र को बदल रहा है ।
महासागर गर्म और अधिक अम्लीय होते जा रहे हैं, जो समुद्री जीवन के लिए खतरा हैं । समुद्र के स्तर

बढ़ रहे हैं और तटीय समुदायों के लिए खतरा पैदा हो रहा है । कई क्षेत्रों में अधिक सूखे का सामना करना पड़ रहा है, जबकि अन्य बाढ़ से पीड़ित हैं । दुनिया के कई हिस्सों में लोग पानी की कमी को भुगत रहे हैं । भूमिगत जलस्रोतों, जिन्हेंव एक्विदफेर कहा जाता है, की कमी के कारण पानी की निरंतर कमी हो रही है । सूखे के कारण वर्षा की कमी या पानी की आपूर्ति भी प्रकृति के प्रदूषण का एक मुख्य कारण है ।

जैवविविधता की सुरक्षा अब बहुत जरूरी है, क्योंकि जलवायु परिवर्तन को कम करने और साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल होने के लिए जैवविविधता महत्वहपूर्ण है । यदि हम जैवविविधता की रक्षा नहीं करते हैं, तो इसका प्रभाव ग्लोबल वॉर्मिंग के प्रभावों के रूप में और अधिक हानिकारक हो सकता है । विशेष रूप से ऊष्णकटिबंधीय जंगलों की जैवविविधता हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है । ये जंगल जलवायु परिवर्तन से लड़ने और किसी भी अन्य पारिस्थितिक तंत्र के प्रकार की तुलना में अधिक प्रजातियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। दूसरे शब्दों में, हमारे स्वास्थ्य के लिए जैवविविधता की सुरक्षा आवश्यक है। इसके साथ ही जैवविविधता प्रकृति को संतुलित करने में मदद करती है ।

वैज्ञानिक आकलन करते हैं। कि कोपेनहेगेन में सम्मेलन होते हैं और पर्यावरण प्रेमी विश्व पर्यावरण दिवस पर रैली निकाल कर संतुष्ट हो लेते हैं । बाजारवाद के चलते न किसी उद्योगपति की इसमें रुचि है और न ही राजनीतिज्ञ की । धरती के गर्भ से लगातार प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है, जिसके कारण धरती इसके दुष्परिणाम झेल रही है ।

हजारों फिट नीचे खदान से कोयला और हीरा निकाला जाता है। बोरिंग के प्रचलन के चलते जगह-जगह से धरती में छिद्र कर दिए गए है । पहले वृक्ष कटते थे अब जंगल कटते हैं । पहाड़ कटते हैं । नदियों को प्रदूषित कर दिया गया है और समुद्र के भीतर भी खुदाई का काम जारी है । अंतरिक्ष में भी कचरा फैला दिया गया है ।

उक्त सभी कारणों के चलते तूफानों और भूकंपों की संख्या बढ़ गई है। मौसम पूरी तरह से बदल गया है कहीं अधिक वर्षा तो कहीं सूखे की मार है। प्रकृति अपना रौद्र रूप दिखाकर बार-बार मानव को चेतावनी दे रहीं है, लेकिन मानव ने धरती पर हर तरह के अत्याचार जारी रखे हैं ।

खेतों की जगह तेजी से कालोनियां ले रही है। शहरी और ग्रामीण विकास के चलते अंधाधुंध वृक्ष काटे जा रहे हैं। चिपको आंदोलन अब कहीं नजर नहीं आता। हरित क्रांति के नाम पर शुरूआत में रासायनिक खाद और तमाम तरह के जहरीले उत्पादन बेचे गए और जब इसके नुकसान सामने आने लगे तो बाजारवादी ले आए हैं जैविक खाद का नया फंडा ।

ग्लेंशियर पिघल रहे हैं । इसके पिघलने से धरती के तापमान में वृद्धि हो रही है । ग्रीन हाऊस 'गैसों के प्रमुख उत्सर्जक देशों' में अमेरिका सबसे आगे है। नवीनतम आंकड़े कहते हैं कि वैश्विक कार्बन डाई आक्साइड उत्सर्जन में अमेरिका तथा चीन का हिस्सा लगभग २० प्रतिशत है ।

वैज्ञानिकों ने अतीत और वर्तमान के आंकडें इकट्ठे कर कम्प्यूटर में दर्ज कर जब तीस साल के बाद की पृथ्वी के हालात जानना चाहे तो पता चला कि धरती का तापमान पूरे एक डिग्री बढ़ चुका है । हिमाचल के ग्लेशियरों के पिघलने की गति बढ़ती जा रही है, समुद्र का जल स्तर १.५ मिलीमीटर प्रतिवर्ष बढ़ रहा है और अमेजन के वन तेजी से खत्म होने के लिए तैयार है बस यह तीन स्थिति ही धरती को खत्म करने के लिए काफी है । यह स्थिति क्यों बनी जरा इस पर सोचे ।

समुद्र, जंगल और ग्लेशियर यह तीनों मिलकर धरती की ९० प्रतिशत गर्मी को तो रोक ही लेते हैं साथ ही धरती के 'वेदर' और क्लाइमेंट' को जीवन जीने के लायक बनाए रखने के लिए भी महत्ववपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पिछले कुछ वर्षों में बाजारवाद, साम्राज्यवाद और जनसंख्या विस्फोट के चलते तीनों को तेजी से नुकसान पहुँचा है ।

तमाम तरह का औद्योगिक उत्पादन और उसका कचरा समेटे नहीं सिमट रहा है तो कुछ को समुद्र में और कुछ को इस कदर जलाया जा रहा है, जिससे आसमान के नीले और सफेद रंग को भी अपने नीले और सफेद होने पर सोचना पड़ रहा है। अब एकदम साफ आसमान की कल्पना घूमिल होती जा रही है। दुनिया के हर बंदरगाह की हालत खराब हो चली है। समुद्र और आसमान को स्वच्छ और रखना मुश्किल होता जा रहा है ।

न्यूलक्लियर टेस्ट तो बहुत बड़ी घटना है, लेकिन छोटी-छोटी घटनाओं से ही धरती माता का दिल दहल जाता है । अमेरिका या ब्रिटेन जैसे विकसित राष्ट्रों में पुरानी बिल्डिंग या स्टेडियम को गिराने के लिए धरती के भीतर ५०-५० टन डाइनामाइट लगाए जाते हैं। इससे धरती भीतर से टूटती जा रही है । दुनिया के हर बंदरगाह की हालत खराब हो चली है। समुद्र और आसमान को स्वच्छ रखना मुश्किल होता जा रहा है ।

अरब के एक खरबपति द्वारा दुबई के समुद्र में विशालकाय टापू बनाया जा रहा है जहां दुनिया की सबसे खूबसूरत बस्ती बसाई जाएगी । इस टापू को बनाने के लिए उस समुद्री स्थान पर रोज हजारों टन पत्थर पहुंचता है । इस तह की उथल-पुथल वहीं नहीं चीन, जापान, रशिया, अमेरिका आदि जगह पर हो रही है जो धरती को धरती नहीं रहने देगी ।

इस धरती के पर्यावरण को बिगाड़ने के लिए प्रत्येक व्यक्ति, संस्था, समाज, संगठन और राष्ट्र जिम्मेदार है । सभी अपने-अपने स्तर पर धरती को नुकसान पहुंचाने में लगे हैं ।

हर साल किसी न किसी देश में जलवायु परिर्वतन पर सम्मेलन होते हैं। रियोंडी जेनेरियों में पर्यावरण को लेकर विकसित और विकासशील राष्ट्र कई बार इकट्ठे हुए, फिर वे ही जिनेवा में भी मिटिंग करते हैं । लेकिन क्या इसका कोई परिणाम निकला? यही सब सोचते हुए लगता है आखिर कौन चाहता है पर्यावरण का संरक्षण करना ? या कहें कि चाहते तो सब हैं लेकिन अपने स्तर पर करते कुछ नहीं हैं ... जल, जंगल और जमीन, इन तीनों तत्वों के बिना प्रकृति अधूरी है। विश्व में सबसे समृद्ध देश वही हुए हैं, जहां यह तीनों तत्व प्रचुर मात्रा में हो। हमारा देश जंगल, वन्य जीवों के प्रसिद्ध है ।

क्या करें :-

पर्यावरण पर बड़ी-बड़ी बातें करने से पहले हमें कुछ आदतें अपनानी होंगी व उनका पालन करना होगा, क्योंकि स्थितियां बदलने की सबसे अच्छी शुरूआत स्वयं से होती है ।

साथ ही यह जानना भी आवश्यक है कि सृष्टि-रचना चक्र में पर्यावरण का क्या महत्व है। पहले पेड़ हुए या गतिशील प्राणी ? फिर सृष्टि रचना की क्रिया में हर प्राणी, वनस्पति का एक निर्धारित स्थान रहा है । इस सृष्टि-रचना में मनुष्य का आविर्भाव कब हुआ ? प्रकृति के इस चक्र में विभिन्न् जीव जंतुओं में क्या कोई समानता है ? वैज्ञानिक दृष्टी से उसको कैसे समझा जाए, जिससे हमें पता चले कि आखिर किसी प्रजाति के लुप्त हो जाने से मानव समाज और पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ सकता है, क्योंकि आखिर हम भी एक प्रजाति ही हैं ।

आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत है पर्यावरण संकट के मुद्दे पर आम जनता को जागरूक करने की। हमने पर्यावरण, वन्य जीव-जंतुओं और मानव समााज का सीधा रिश्ता आम आदमी की समझ के मुताबिक समझाने का प्रयास सरल व वैज्ञानिक दृष्टि से किया है। जीव-जंतुओं व जंगल का विषय है तो बड़ा 'क्लिाष्टर', पर है उतना ही रोचक। इसे समझने के लिए सबसे पहले खुद पर पड़ रहे पर्यावरण के प्रभाव को जानना आवश्यक है।

दिनोदिन गंभीर रूप लेती इस समस्या से निपटने के लिए आज आवश्यकता हे एक ऐसे अभियान की, जिसमें हम सब स्वप्रेरणा से स्रकिय भागीदारी निभाएं। इसमें हर कोई नेतृत्व करेगा, क्योंकि जिस पर्यावरण के लिए यह अभियान है उस पर सबका समान अधिकार है।

तो आइए हम सब मिलकर इस अभियान में अपने आप को जोड़ें। इसके लिए आपको कहीं जाने या किसी रैली में भाग लेने की जरूरत नहीं, केवल अपने आस-पड़ोस के पर्यावरण का अपने घर जैसा ख्याल रखें जैसे कि घर के आसपास पौधारोपण करें। इससे आप भूक्षरण, धूल इत्यादि से बचाव तो कर ही सकते हैं, पक्षियों को बसेरा भी दे सकते हैं, फूल वाले पौधों से आप अनेक कीट-पतंगों को आश्रय व भोजन दे सकते हैं ।

शहरी पर्यावरण में रहने वाले पशु-पक्षियों के प्रति सहानुभूति रखें व आवश्यकता पड़ने पर दाना-पक्षी या चारा उपलब्ध कराएँ ।

पेड़ लगाएं तथा अपने
हिस्से की जिम्मेदारी निभाएं ।

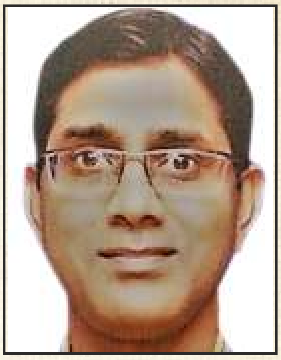

नरेश वर्मा,
उप महाप्रबंधक (एचआर), इरेडा

!! सर्वनिंदक महाराज !!

एक थे सर्वनिंदक महाराज। काम-धाम कुछ आता नहीं था पर निंदा गजब की करते थे। हमेशा औरों के काम में टाँग फँसाते थे।

अगर कोई व्यक्ति मेहनत करके सुस्ताने भी बैठता तो कहते, मूर्ख एक नम्बर का कामचोर है। अगर कोई काम करते हुए मिलता तो कहते, मूर्ख जिंदगी भर काम करते हुए मर जायेगा।

कोई पूजा-पाठ में रुचि दिखाता तो कहते, पूजा के नाम पर देह चुरा रहा है। ये पूजा के नाम पर मस्ती करने के अलावा कुछ नहीं कर सकता। अगर कोई व्यक्ति पूजा-पाठ नहीं करता तो कहते, मूर्ख नास्तिक है! भगवान से कोई मतलब ही नहीं है। मरने के बाद पक्का नर्क में जायेगा ।

माने निंदा के इतने पक्के खिलाड़ी बन गये कि आखिरकार नारदजी ने अपने स्वभाव अनुसार.... विष्णु जी के पास इसकी खबर पहुँचा ही दिया। विष्णु जी ने कहा उन्हें विष्णु लोक में भोजन पर आमंत्रित कीजिए।

नारद तुरंत भगवान का न्योता लेकर सर्वनिंदक महाराज के पास पहुँचे और बिना कोई जोखिम लिए हुए उन्हें अपने साथ ही विष्णु लोक लेकर पहुँच गये कि पता नहीं कब महाराज पलटी मार दे।

उधर लक्ष्मी जी ने नाना प्रकार के व्यंजन अपने हाथों से तैयार कर सर्वनिंदक जी को परोसा। सर्वनिंदक जी ने जमकर हाथ साफ किया। वे बड़े प्रसन्न दिख रहे थे। विष्णु जी को पूरा विश्वास हो गया कि सर्वनिंदक जी लक्ष्मी जी के बनाये भोजन की निंदा कर ही नहीं सकते। फिर भी नारद जी को संतुष्ट करने के लिए पूछ लिया, और महाराज भोजन कैसा लगा?

सर्वनिंदक जी बोले, महाराज भोजन का तो पूछिए मत, आत्मा तृप्त हो गयी। लेकिन... भोजन इतना भी अच्छा नहीं बनना चाहिए कि आदमी खाते-खाते प्राण ही त्याग दे।

विष्णु जी ने माथा पीट लिया और बोले, हे वत्स, निंदा के प्रति आपका समर्पण देखकर मैं प्रसन्न हुआ। आपने तो लक्ष्मी जी को भी नहीं छोड़ा, वर माँगो।

सर्वनिंदक जी ने शर्माते हुए कहा -- हे प्रभु मेरे वंश में वृध्दि होनी चाहिए।

तभी से ऐसे निरर्थक सर्वनिंदक सभी जगहों में पाए जाने लगे...

'सार' हम चाहे कुछ भी कर लें.. इन सर्वनिंदकों की प्रजाति को संतुष्ट नहीं कर सकते! अतः ऐसे लोगों की परवाह किये बिना अपने कर्तव्य पथ पर हमें अग्रसर रहना चाहिए।

सदैव प्रसन्न रहिये।
जो प्राप्त है, पर्याप्त है।।

(संकलन)

डॉ. प्रसून कुमार झा
वरि. सहायक(कार्मिक–राजभाषा),सेल

मानसिक तनाव से मुक्ति के उपाय

जीवन में हमेशा तनाव में रहना काफी खतरनाक होता है । तनाव हमारी प्राकृतिक ऊर्जा को समाप्त करता है और एक तरह की मानसिक बीमारी को बढ़ावा देता है जो हम पर काफी खतरनाक तरीके से हावी हो जाता है । अगर आप तनाव के शिकार है तो इससे आपके शरीर का प्राकृतिक सन्तुलन बिगड़ जाता है ।
मानसिक तनाव के कारण आप हर एक चीज से आशा छोड़ देते है । ऐसे समय में आपको खाने–पीने में भी कोई रुचि नहीं होती । हालांकि अगर आप तनावमुक्त जीवन जीना चाहते हैं तो इसके लिए भी कुछ निम्नलिखित उपाय है और यही सही समय है जब आप इन उपायों को अपने जीवन में उतारें ।

मानसिक तनाव दूर करने के उपाय :-

आराम करें – अगर आराम से आपका तात्पर्य शरीर को बेढंग अंदाज में इधर–उधर घुमाना और अजीब सी आवाजें निकालना है तो एक बार फिर सोचिए । किसी भी काम को बार–बार करने से हमें आराम मिल सकता है । टहलना, तैरना, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई आदि ऐसी चीजें है जो आप बार–बार कर सकते है और इनसे आपको आराम मिलता है ।

जब आप अपनी नौकरी, अपनी शादी और अन्य चीजों के बारे में सोचते हैं तो इसी बीच आखें बंद करके बैठें और दिमाग से सारी चिन्ता से निकालने का प्रयास करें ८ से १० मीनट रोजाना इसे करें और आप पाओगे कि आपको काफी आराम का अनुभव हो रहा है ।

लम्बी साँस लें – चिन्ता में रहने की स्थिति में लोग काफी तेजी से एवं काफी छोटी–छोटी सांसें लेते है । अतः तनाव को दूर करने के लिए आराम से धीरे–धीरे सांस लेते हैं । सांस छोड़ते समय हवा को अपने मुख से बाहर जाता महसूस करें और अपने पेट के कम होने का अनुभव करें । फिर दोबारा सांस लेते वक्त अपने स्नायुओं, शिराओं और मस्तिष्क को आराम की मुद्रा होने को अनुभव करें । अपने पेट का बढ़ा हुआ आकार महसूस करें और अपने रीढ़ की हड्डी का सीधा होना महसूस करें । इस पूरी प्रक्रिया को १० बार करने से आपको काफी आराम मिलेगा ।

बाहर के नज़ारे देखें – इस प्रक्रिया के अन्तर्गत अपने आस–पास की चीजों को महसूस करें । बाहर जायें और फूलों के रंग और चिड़ियों के चहचहाने का अनुभव करें । प्रकृति का आनंद लें । किसी मॉल में

जायें और विभिन्ने प्रकार के कपड़े उठाकर देखें, आभूषणों का जायजा लें और हर चीज के बनावट संबंधीं विचारों पर चिन्तन करें । जब तक आप आज की चीजों पर ध्यान केन्द्रित रखेंगे तब तनाव आपसे कोसों दूर रहेगा ।

खुद की मसाज करें – अपने दोनों हाथों को अपने गले एवं आस–पास के भागों पर रखें । अब अपनी उंगलियों एवं हथेलियों का प्रयोग करते हुए अच्छे से दबायें और गले के पास प्यार से उंगलियाँ फिरायें । अब अपने एक हाथ को दूसरे हाथ पर रखें । अपनी मासपेशियों को धीरे–धीरे उंगलियों से दबाऐ। अपनी उंगलियों को कोहनी के ऊपर–नीचे धीरे–धीरे फराये और हल्के हाथों से मसाज करें । ब्रिटिश डायरी हार्ट के एक नए शोध के मुताबिक हल्का एवं सुकून देने वाला संगीत तनाव को काफी हद तक कम कर देता है, अतः कहीं जाते समय अपने संगीत की पोटली को साथ में रखना न भूलें । संगीत आपकी सारी चिन्ताऐं भूला देता है और आपको किसी और ही दुनिया में ले जाता है ।

कल की तैयारी करें – किसी चीज को तैयारी न करके उसे करने की कोशिश करने जैसा तनाव और किसी भी कार्य में नहीं होता। अतः किसी भी काम में जुटने से पहले उसके बारे में जान लें और उससे जुड़ी सारी तैयारियां कर लें । अगर आप किसी कार्य के प्रति पूर्णरूप से समर्पित एवं आत्मविश्वास से भरपूर होंगे तो उसे पूर्ण करने का हौसला भी आपमें अपने आप आ जाएगा और आप तनाव से कोसों दूर रहेंगे ।

खाने की इच्छा से खुद को न रोकें – कई महिलाएं अपना तनाव घटाने के लिए उन खाद्य पदार्थो को ग्रहण करती है जिनसे वे सामान्य तौर पर दूर ही रहती हैं और ये स्थिति पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक देखी जाती है । ज्याादातर महिलाये बहुत से खाद्य पदार्थो से परहेज करती हैं, जहां तक कि अपने मनपसन्द भोजन भी ग्रहण नहीं करती क्योंकि उन्हें अपना वजन घटाने की चिन्ता रहती है। पर तनाव में इस तरह के भोजन की इच्छा कई गुणा बढ़ जाती है ।

जो लोग डाइटिंग नहीं करते हैं उसी तुलना में डाइटिंग करने वाले पुरूषों एवं महिलाओं में तनाव की स्थिति में ज्यादा खाने की प्रवृति देखी जाती है और ऐसे वक्त उनमें इन्हीं वसा युक्त भोजनों को ग्रहण करने की इच्छा् जागृत होती है जिनसे आमतौर पर वे दूर रहते हैं । अतः आपके लिए आवश्यक है कि कभी भी अपनी इच्छाओं को न दबाए । हमेशा कुछ स्वादिष्ट परन्तु स्वाथ्यवर्धक चीजें अपने पास रखें । अगर आपको नमकीन खाने की इच्छा है तो बदाम या मूँगफली अपने पास रखें, प्रोटीन लेने की इच्छा होने पर डेरी उत्पादकों का प्रयोग करें और कुछ मीठा खाने की इच्छा होने पर डार्क चॉकलेट का सेवन करें ।

प्यार जाहिर करें – अपने खिलौने को गले से लगाएं, घरवालों से प्यार से पेश आएं, अपने चाहने वाले के साथ अच्छा समय बिताएं या अपने आस–पास के लोगों के वहाँ होने की बात को महसूस करें और उनसे वर्तालाप करें । ऐसा करने पर आप अपने तनाव के स्तर में काफी अन्तर पाएंगे ।

लोगों से मिलने–जुलने और प्यार से पेश आने का सीधा असर दिमाग पर पड़ता है । जिन चीजों के बारे में आप सोच भी नहीं सकते थे, वे जब होने लगती हैं तो दिमाग की स्थिति में काफी सुधार आता है । शोध के अनुसार अपने पालतू जानवर जैसे कुत्ते या बिल्ली् के साथ वक्त बिताने से रक्त चाप कम होता है, तनाव में गिरावट आती है और तनाव के हार्मोन्स भी कम होते है ।

उंगलियों को आराम दें – ईमेल, मैसेज और तरह–तरह के फोन उपलब्ध होने की वजह से ऐसा लगता है कि खुद के लिए कोई समय बचा भी नहीं । इतने सब कामों के बाद आराम करने का समय बिल्कुल नहीं

होता या यूं कहें कि न के बराबर होता है । तकनीक में उन्नति वैसे तो काफी अच्छी बात है, पर इससे हमारे तनाव की स्थति में काफी बढ़ोत्तरी भी होती है । अतः अपने फोन को और उंगुलियों को आराम दें और तनाव मुक्त् जीवन का अनुभव करें ।

पुरानी सफलताओं को याद करें – अपने व्यस्त जीवन से कुछ समय निकालकर यह सोचें कि किस प्रकार विषम परिस्थितियों के बावजूद अपने काम में सफलता अर्पित की थी । जब भी कभी आपको यह लगे कि आप अपनी समस्या से निपटने में असमर्थ है, तुरन्त अपने पुराने और खुशहाल जीवन की कल्पना करें, जब ऐसी समस्याओं का आपने डटकर सामना किया था तथा उन पर विजय भी पायी थी । अगर आप तलाक की समस्या से जूझ रहे हैं या किसी जानने वाले के दुःख में दुखी हैं तो आपको हेल्थ क्लास की आवश्यकता है ।

मानसिक तनाव के समय किसी से बात करें आप तनाव के वक्त अपने परेशानियों के बारे में किसी से बात कर सकते हैं । इससे आपकी चिन्ता काफी हद तक कम हो जाती है । ध्यान रखें कि बात करते वक्त सिर्फ ऐसी बातें छुपाऐ जो कि आप दिल के काफी करीब हों । जब आप खुल कर बात करते हैं तो अपने अन्दर छिपे डर और चिन्ता को आप दुनिया के सामने ला रहे होते है । यह समय अपने दोस्तों और परिवार के साथ बिताने का उपयुक्त मौका है। एक बार उन्हें ये बात पता चल जाने पर वो आपके अच्छे स्वास्थ्य के लिए कुछ भी कर सकते हैं ।

मानसिक तनाव से मुक्ति, तनाव दूर करने के लिए खुद से बात करें यह सुनने में अजीब अवश्य लग सकता है, पर जब आप तनाव में हों तो खुद से वार्तालाप भी काफी फायदा पहुंचाता है। यह पद्धति का प्रयोग करने से आपके अन्दर काफी आत्म विश्वास तथा आन्तरिक शक्ति जागृत होगी। आपको पता है कि आपको बहुत से काम करने है और इसके लिए आपको खुद के साथ अकेले में थोड़ा वक्त चाहिए। इसके लिए आप कोई सुनसान जगह चुन सकते है ।

तनाव के समय सही खानपान करें यह बात काफी आवश्यथ्क है । सही खानपान का तनाव दूर करने से काफी गहरा संबंध है । आमतौर पर तनाव के समय आप सही खानपान छोड़कर ऐसी चीजें खाने लगते हैं जो कि आपकी सेहत के लिए सही नहीं होती। ऐसे में आपका वजन बढ़ जाता है जो कि आपके शरीर के लिए हानिकारक होता है। ताजे फल और सब्जियों का सेवन करें । इससे आपका तनाव कम होगा और आप काफी तरोताजा महसूस करेंगे ।

तनाव से मुक्ति पाने के लिए ज्यादा काम करें तनाव के समय काम जितना ज्यादा होगा, उतना ही आपको सेहत के लिए अच्छा होगा। काम की जिम्मेदारियों से आपके तनावग्रस्त होने का समय ही नहीं मिलेगा । दफ्तर में ज्यादा समय बिताएं तथा साथियों से बात करें । इससे आपको काम भी अच्छा होगा और तनाव से भी आप दूर रहेंगे ।

अगर आप मानसिक तनाव से ग्रसित है तो इन विधियों को अपना कर अपनी मानसिक तनाव संबंधित समस्या को आसानी से दूर कर सकते।

जयश्री सबनानी
प्रबंधक, मेकॉन लिमिटेड

करोना का जीवाणु (स्वरचित)

जो शरीर काम कर-कर के थकता था,
अब बैठे-बैठे थक सा रहा है,
ये करोना नामक जीवाणु,
शरीर को ढस सा रहा है।।
अंदर ही अंदर डर से,
मर रहा है, ये इन्सान,
बीमारी का पता तो न जाने,
कितने दिनों के बाद चल रहा है।
कुछ आक्सीजन ना मिलने पर जा रहे हैं,
तो कुछ दवाइयां व बेड देखकर ही घबरा रहे हैं।
करोना के डर से दूसरे मरीज़ भी,
अस्पताल नहीं पहुंच पा रहे हैं।।
घरो के अंदर ही, सहमे-सहमे
दुबके हुये नज़र आ रहे हैं।।
ना जाने क्या-क्या ये,
करोना अपने साथ लेकर जायेगा,
रिश्तों की दीवार पर भी,
ये ही दीमक लगायेगा।।
करोना का नाम सुनते ही,
रिश्तेदार भागे जा रहे हैं,
दो गज़ की दूरी को,
महीनो-महीनो से बड़े दिल से निभा रहे हैं।।
जाने कब इस जीवाणु का,
अन्त हो जायेगा।।
मानव जीवन जीना एक बार,
सरल, सुलभ हो जायेगा।।

प्रतीक साव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा), एमएसटीसी

शब्दों के शहर में

उस दिन रविवार था ।
कार्यालय की छुट्टी थी ।
तो छुट्टी का आनंद लेने
घूमते-घूमते मैं पहुँच गया ।
शब्दों के शहर में ।
वहाँ मैंने देखा ,
बहुत से कवि,कहानीकार,अनुवादक बड़ी ही व्याकुलता के साथ
अपनी रचनाओं को सार्थक अर्थ देने के लिए
शब्दों के आगे-पीछे भाग रहें थे ।
यह सब देख,
मेरे अन्दर भी कवि बनने की इच्छा जागी ।
और फिर,
मैंने भी हथियार उठाया ।
सुबह से लेकर शाम तक तलाशने के बाद
जब शहर में धुंध था,
चारों तरफ निःशब्दता थी ।
कवि निराला की संध्या सुन्दरी
अपनी सखी नीरवता के साथ अम्बर पथ से आ रहीं थी ।
शब्दों के शहर के सारे शब्द
दिन-भर
शब्द से वाक्य और
वाक्य से कविता की पंक्ती ,
बनने के प्रयास में थक चुके थें ।
ऐसे विकट समय में,
मैंने अपनी पहली कविता का शीर्षक ,
शब्दों के शहर में उद्घोषित किया ।
इसके बाद जो हुआ ।

बस पूछिए मत
शब्दों के सैलाब ने मुझे घेर लिया
और धमकी देने लगे ।
"उन्हें मेरी कविता की पंत्तियो में शामिल होना था ।"
परन्तु मैं भी सचेत था ,
क्योंकि कविता पहली थी ।
शब्दों के शहर में कुछ शब्द मूर्द्ध थे,कुछ दन्त, कुछ ओष्ठ और कुछ नासिका थे ।
परन्तु मैं उन परम शब्दों की तलाश में था ।
जो मेरी कविता को सार्थक अर्थ दे सके ।
तभी शब्दों के शहर के महामहीम बादशाह
शब्दों में फैली अराजकता, अनुशासनहीनता और भगदड़ को देख
वहां पधारे
मेरे कविता के शीर्षक को देखते ही
गरगराहट भरी भारी स्वर में उन्होंने
अपने विकराल मुख से कहा
''तुम ने प्रयास तो अच्छा किया है ।''
परन्तु तुम्हारी शीर्षक पर लिखी गई कविता
किसी ईश्वर के सम्पूर्ण वर्णन जैसा है ।
हमारे शब्दों के शहर में इतने शब्द नहीं है।
जो तुम्हारी ''माँ'' शीर्षक की कविता को सार्थक कर सके ।
......और इस तरह मैं
हर रविवार
अपनी पहली कविता
''माँ''
को पूरा करने निकल जाता हूँ
शब्दों के शहर में ।
शब्दों के शहर में ।

आकांक्षा जी खोडा
ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

!! आओ पेड़ बन जाये हम !!

आओ पेड़ बन जाये हम
धरती की हरियाली चादर बन सब तरफ छा जाये, हम
पथिक को ठण्डी छांव देंगे
प्या सों के लिए मेघ बुलायेंगे
अपने फूलों से धरती की सेज सजायेंगे
पत्तियों को गिराकर धरा को उर्वर बनायेंगे
पशु-पक्षियों और मानव के लिए अनोखे स्वा द वाले फल लगायेंगे
सबको प्राणवायु का संचार करेंगे
हम सब मिलकर खड़ें रहेंगे, हमेशा सीना ताने
आओं पेड़ बन जाये, हम
धरती की हरियाली चादर बन सब तरफ छा जाए, हम
पेड़ बनकर सब साथ-साथ रहेंगे
धरती मां हम सब की होगी
न होगा लड़ाई झगड़ा, न होगा खून खराबा
कई पीढ़ियों का ख्याल रखेंगे
धरती से हम जितना लेंगे, उससे ज्यादा लौटा देंगे
युगों-युगों से धरती के गर्भ से जन्म लेती आयी कई पीढ़ियां
आओं पेड़ बन जाये, हम
धरती की हरियाली चादर बन सब तरफ छा जाए हम
आओं पेड़ बन जाये, हम
चाहे आंधी आये या तुफान एक साथ लहरायेंगे
बारिश के मौसम में फल-फूलों से, सबका तन-मन हर्षायेंगे
गर्मी की कड़ी धूप में पशु-पक्षी और मानव को अपनी छांव बुलायेंगे
सबको उपहार में कुछ न कुछ देकर प्रेम की रीत बनायेंगे
पत्ता-पत्ता धरती मां को अर्पित करके नयी कोपलें लगायेंगे
नन्ही-नन्हीं कोमल पत्तियां धरती का नवश्रृंगार करेंगी
आओं पेड़ बन जाये हम
धरती की हरियाली चादर बन सब तरफ छा जाए हम

आओं पेड़ बन जाये, हम
आओं पेड़ बन जाये, हम....

डॉ. हीरा मीणा
पूर्व सहायक प्रोफेसर
दिल्ली विश्व विद्यालय, दिल्ली

मन करता है .... !!

मन करता है, काली बदरी बन नील गगन में छा जाऊँ
सूखें ताल तलैया, सूखी नदियां, प्यांसी धरती और त्रस्त मानवता पर
उमड़-धुमड़ कर गरज-गजरकर बरसती जाऊँ
मन करता है, दूब, पेड़ पौधें की हरियाली बन धरती पर छा जाऊँ
बसंती हवाएँ बनकर सबका तन मन हर्षा जाऊँ
मन करता है, जीवन रूपी बगियां में फूलों का वन लगाऊँ
जहां-जहां मैं जाऊँ बस खुशबू ही फैलाती जाऊँ
इस धरा के अनुभवों से रंग बिरंगे रंगों को बटारे लाऊं
रंगहीन, सुस्त और गमगीन मानवता पर रंग बरसाती जाऊँ
मन करता है, आसमान में सुन्दर झूला डालू
नभ से धरती,धरती से नभ की सबको सैर कराऊँ

मन करता है,.
बस मन करता है ।

डॉ. गौतम कुमार मीणा
सहायक प्रबंधक, दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

हिन्दी इतनी समर्थ, फिर क्यों असमर्थ

हिन्दी भाषा ने अपने उदभव से लेकर आजतक लम्बी विकास-यात्रा तय की है। हिंदी भाषा का विकास चिरकालीन रहा है। हिंदी भाषा एवं भारतीय भाषाओं ने अपने विकास-यात्रा में कई चरणों को पार किया है। आज की जो हिंदी या मानक हिंदी है उसके विकास का इतिहास लगभग १००० वर्ष पुराना है। हिंदी भारोपीय भाषा परिवार की भारत ईरानी शाखा की भारतीय आर्यभाषा है। भारतीय आर्यभाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संहिताओं में मिलता हैं। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के दो रूप वैदिक और लौकिक संस्कृत के रूप में मिलते हैं। प्राचीन आर्यभाषा के अंतर्गत संस्कृत भाषा का सुदृढ़ युग रहा है जिसमें वेद, उपनिषद, पुराण आदि की रचना हुई, इसीलिए इस भाषा को वैदिक संस्कृत भी कहा जाता है ।

पालि बोध धर्म की भाषा है । पालि भाषा का संबंध मगध से था, इसीलिए इसे मागधी भाषा भी कहा गया है । बौद्ध धर्म का संदेश गौतम बुद्ध ने इसी पालि भाषा में दिया था । त्रिपिटक निकाय की रचना इसी भाषा में हुई । सम्राट अशोक के शिलालेखों की भाषा भी पालि ही थी ।

''मध्यलकालीन आर्यभाषा के विकास की दूसरी स्थिति में जो जनभाषाएं साहित्य में प्रतिष्ठित हुई, उन्हें 'प्राकृत' कहते है ...... प्राकृत के दो अर्थ हैं एक तो जनभाषा और दूसरा प्रकृति या मूल से उत्पन्न, अर्थात संस्कृ'त की पुत्री ।''

प्राकृत प्रादेशिक विस्तार और विभिन्नता 'धर्म, क्षेत्र, प्रयोग, लेखन आदि' के आधार मुख्य् रूप से शौरसेनी, पैशाची, मागधी, अर्द्धमागधी, महाराष्ट्रीय, केकय, अक्क,, ब्राचड़ खस आदि नामों से जानी जाती है ।

अपभ्रंश भाषा रचना काल ५०० ई. से १००० ई. तक माना जाता है ।

अपभ्रंश का शाब्दिक अर्थ है गिरा हुआ, बिगड़ा हुआ, विकृत, भ्रष्ट, च्युत, स्वलिखित, अशुद्ध आदि । शिष्ट समाज की शिष्टक भाषा प्राकृत के विरोध में विकसित जनभाषा को अपभ्रंश के नाम से जाना जाता है । जनसामान्य , आम जनता, अनपढ़, गंवार लोगों की भाषा को अपभ्रंश कहा गया । वह भाषा जो साहित्यिक प्रयोग की दृष्टि से सर्वथा वर्जित अनुपयुक्त, अक्षम तथा व्यााकरणिक स्तार पर भ्रष्टक, त्यारज्या, बिगड़ी हुई हो, अपभ्रंश कहलाती है ।

डॉ. रामगोपाल शर्मा ‘दिनेश’ के अनुसार, ‘‘यद्यपि अपभ्रंश अपने मूल रूप में पन्द्रहवीं शताब्दी तक साहित्य की भाषा बनी रही, तथापि आठवीं शताब्दी से ही बोलचाल की भाषा से पृथक होकर उसके समानान्तर साहित्य रचना का माध्यम बन गई थी ।’’

अपभ्रंश का साहित्य विविधता का संसार है, अपार सौंदर्य का आगार है । जिसमें जैन कवियों के द्वारा रचित एक तरफ तो पुराण साहित्य है और दूसरी तरफ चरित काव्य का भण्डार है। विद्वानों ने अवहटठ भाषा को अपभ्रंश के दूसरे नाम या उसके बाद विकसित होने वाली भाषा की संज्ञा दी है । डॉ. हरदेव बाहरी के अनुसार ‘‘पश्चिम और मध्यदेशीय प्रदेश की लोकभाषा को अवहटठ कहा जाता था। इस प्रकार अपभ्रंश के उत्तर काल में और आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के उदयकाल से पहले की, अर्थात उस संधिकाल या संक्रांतिकाल की भाषा अवहटठ थी ।’’

खडी बोली हिंदी का उदभव व विकास अपभ्रंश एवं अवहटठ का अगला चरण है । भारत वर्ष में बहुविध भाषा बोली जाती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेलद ३५१ में अष्ठम सूची में २२ (बाईस) भारतीय भाषाओं को मान्यमता प्रदान की गई है । इनमें बंगला, उडिया, असमिया, मराठी, गुजराती, उर्दू, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, पंजाबी, कश्मीनरी, हिंदी, सिंधी, संस्कृत, कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली, मैथिली, संताली, बोड़ो, डोगरी मुख्य भाषाएं हैं । इन सभी भाषाओं के सम्मिलित रूप के साथ हिंदी का प्रयोग भी संपूर्ण भारत में होता है । वस्तुतः हिंदी का अर्थ ‘हिंद की भाषा’ है एवं यह भाषा पूरे भारतवर्ष में अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक बोली और समझी जाती है। ‘हिन्दी’ शब्दा फारसी से आगत है ।’’

हिन्दी शब्द की उत्पत्ति हिन्दी’ एक ऐसा शब्द है जिसका उदभव संस्कृत शब्द ‘सिंधु’ से हुआ है । हिंदी शब्द का संबंध मूलत- नदी विशेष वाचक शब्दं ‘सिंधु’ से माना है ईरान से आने वाले व्यापारियों ने ध्वानि परिवर्तन करके ‘स’ को ‘ह’ और सिंधु को हिंदु कर दिया । यही ‘हिंदु’ शब्दक कालांतर में अरबी फारसी के प्रभाव से ‘हिंद’ बना और इसी में ‘इक’ प्रत्यय से ‘हिंदीक’ बना जो ग्रीक में ‘इंदीक’, ‘इंदिका’, तथा अंग्रेजी में ‘इंडिया’ बन गया । हिंदीक शब्द से क प्रत्यिय के लोप होने से हिंदी शब्द बना जिसका अर्थ हिंदी भाषा से ही है ।

हिंदी के प्रारम्भिक नाम है हिंदवी, हिंदुई, हिंदुस्तानी, दखि्खनी, हिंदी, रेख्ता , रेख्ती, उर्दू, कौरवी, नागरी, सरहिंदी, खड़ी बोली आदि है ।

हिंदी भाषा पहुँच उपभाषा वर्ग और उसके अंतर्गत सत्रह-अटठारह बोलियों से निर्मित और विकसित हुई है ।

उपभाषाएं (भाषा-हिंदी)

पश्चिमी हिंदी	पूर्वी हिंदी	राजस्थाननी	पहाड़ी	बिहारी
शौरसेनी अपभ्रंश	अर्द्धमागधी अपभ्रंश	शौरसेनी अपभ्रंश	नागर अपभ्रंश	मागधी अपभ्रंश
१.ब्रजभाषा	१. अवधि	१. मारवाड़ी	१. कुमायुंनी	१. भोजपुरी
२.हरियाणी	२. बघेली	२ जयपुरी	२. गढ़वाली	२. मगही
३.बुंदेली	३. छत्तीसगढ़ी	३ मेवाती		३. मैथिली
४.कौरवी		४. मालवी		
५.कन्नौ जी				
६.दक्खिनी				

डॉ. हरदेव बाहरी के अनुसार ''यह हिंदी ऐतिहासिक दृष्टि से युग-युग की मध्यादेशीय भाषाओं संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि की उत्तराधिकारिणी है ।''

इन सबकी सम्पत्ति शब्दावली, मुहावरे, लोकोक्तियां, साहित्य और साहित्यक की विविध विधाएं इसी भाषा को विरासत में मिली है हिंदी सारे देश में व्याप्त है, व्यवहार में यह राष्ट्रभाषा अवश्य है हिंदी पूरे हिंद की भाषा है परंतु राजनीतिक स्वालर्थों के कारण कुछ राज्यों द्वारा इसे राष्ट्रभाषा की मान्यता प्रदान नहीं की है, फिर भी हिंदी भाषा अपने विस्तार क्षेत्र को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर और भी विशाल और समृद्ध करती जा रही है। हिंदी भाषा के विकास के बाद इसके कई रूप उभरकर आये है जैसे :-

१. राजभाषा :- राजभाषा को अंग्रेजी में Official Language कहा जाता है। सरकारी कामकाज के लिए राजभाषा का प्रयोग किया जाता है । इसका प्रयोग मुख्यता चार क्षेत्रों में अपेक्षित है दृ शासन, विधान, न्यायपालिका और कार्यपालिका कई देशों में

   राजभाषा और राष्ट्रभाषा एक ही होती है परंतु भारत जैसे बहुभाषी देश में 'राजभाषा' की समवैधानिक घोषणा की गई है, राष्ट्रभाषा की नहीं। १४ सितम्बर, १९४९ को हिंदी को भारत की राजभाषा स्वीकार कर लिया गया। संविधान के भाग १७ में अनुच्छेद ३४३ से ३५१ में राजभाषा संबंधी प्रावधानों का उल्लेख किया गया है, जिसमें हिंदी भाषा को सरकारी स्तर पर ज्याादा से ज्यादा बढ़ावा देने के प्रावधानों का उल्लेख किया गया है ।

२. मानक भाषा :- मानक भाषा का सामान्यः अर्थ है आदर्श भाषा, शुद्ध भाषा, टकसाली भाषा और परिनिष्ठित भाषा परिष्कृत भाषा, व्याकरणबद्ध भाषा आदि अंग्रेजी के Standred Language शब्द का हिंदी पर्याय 'मानक भाषा' को ही कहा जाता है। ''मानक भाषा किसी राष्ट्र और समाज की वह आदर्श भाषा होती है जिसका प्रयोग वहां के शिष्ट समुदाय द्वारा अपने साहित्यिक, प्रशासनिक, विधि, न्याय, व्यापारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक आदि सभी क्षेत्रों में औपचारिक कार्यो में समान रूप से किया जाता है। जो उच्चारण एवं लेखन में समरूप होता है।''

३. संपर्क भाषा :- दो भिन्न भाषा-भाषी व्यक्ति किसी अन्य भाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान-प्रदान करते है, वह भाषा सम्पर्क भाषा कहलाती है। सम्पर्क भाषा को अंग्रेजी में लिंगेवा फ्रेंका (Lingua&Franca) के हिंदी अर्थ के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। एक प्रदेश या एक भाषा के बोलने वाले लोग अन्य भाषा भाषियों से जिस भाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान प्रदान करते है, उसे लिंग्वास फ्रेंका अथवा संपर्क भाषा कहा जाता है। हिंदी अधिकांश भारतवासियों की संपर्क भाषा के रूप में भी कार्य करती है ।

४. अंतर्राष्ट्रीय भाषा :- हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपयोग में लाई जाने वाली विश्व की तीसरी भाषा बन चुकी है । विश्व के लगभग १८० विश्व विद्यालयों में हिंदी की उच्चा स्तर की शिक्षा-दिक्षा दी जा रही है। फीजी, गयाना, सूरीनाम, मारीशस, पाकिस्तान, त्रिनिनाद, भूटान, बाग्लादेश, नेपाल आदि देशों में हिंदी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है । आजीविका और रोजगार की तलाश में सुदूर देशों जैसे अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाड़ा में भी हिंदी का प्रयोग तीव्रगति से बढ़ता जा रहा है । अमेरिका ने तो १२ वीं में अनिवार्य विषय के तौर पर हिंदी भाषा को अपने पाठयक्रम में शामिल कर लिया है । रेडियों, टेलीविजन और कम्प्यूटर में इंटरनेट सेवाओं के कारण हिंदी भाषा आज देश ही नहीं वरन विश्प की सार्वभौमिक भाषा बनती नजर आ रही है ।

५. राष्ट्रभाषा :–राष्ट्रभाषा का सामान्य अर्थ 'राष्ट्र की भाषा' से ही होता है । भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में बहुत सी भाषाएं है तो प्रश्न उठना स्वभाविक है कि क्या वे सब राष्ट्रभाषा हैं ? या फिर इन सभी भाषाओं में से राष्ट्रभाषा किसे कहेंगे और क्यों ? बहुत से प्रश्न राष्ट्रभाषा के संदर्भ में कहते है इन प्रश्नों के जवाब से ही हम राष्ट्रभाषा के सही और सार्थक अर्थ तक पहुँच सकते है ।

जब कोई बोली आदर्श और परिनिष्ठित भाषा बनकर राष्ट्रीय भावना का संबल बन जाती है । जिसका प्रयोग देश की अधिकांश जनता बहुप्रचलित भाषा के रूप में करती है, उस भाषा को राष्ट्रभाषा कहा जाता है । राष्ट्रभाषा से देश की राजनैतिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना का संचार होता रहता है । जो भाषा किसी देश को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है, जो संपूर्ण देश में संपर्क सेतू का आधार होती है जिस भाषा को देश का बहुसंख्यकवर्ग जानता है, समझता और अपने कार्य व्यापार के निष्पादन के लिए प्रयोग में लाता है, वह भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है । हिंदी भाषा के महत्व के कारण ही यह राष्ट्रीय एकता, आत्म सम्मान, भारतीय अस्मिता, सांस्कृतिक समन्वीय, समाज सुधार के साथ साथ देश की स्वतंत्रता में इसका अमूल्य और अभूतपूर्व योगदान सिद्ध हो गया है ।

सबसे विलक्षण बात यह है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की पहल करने वाले महान सपूत स्वयं हिंदीत्तर भाषी लोग थे जैसे बंगला भाषा के रविन्द्र नाथ टैगोर, राजाराम मोहनराय, सुभाषचन्द्र बोस, बंकिमचंद चटर्जी, केशव चंद सेन आदि गुजराती भाषा के महात्मा गांधी, दयानन्द सरस्वती आदि, मराठी भाषा के लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक आदि हिंदी जन जन की भाषा है आम लोगों की भाषा है । अधिकांश भारतीय इसे बोलते है, समझते है और प्रयोग में लाते है फिर भी इसे संविधान में राष्ट्राभाषा का दर्जा नहीं दिया गया है । यह सभी भारतीयों के लिए विचारणीय प्रश्न है । जिसपर गंभीर चिंतन मनन होना चाहिए ।

हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने के समर्थन में विद्वानों के विचार

१. राष्ट्र भाषा की जगह एक हिंदी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं। महात्मा गांधी
२. हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। महर्षि दयानंद सरस्वती
३. हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ बनाती है। राजर्षि पुरूषोत्तमदास टंडन
४. हिंदी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगा। डॉ जाकिर हुसैन
५. हिंदी में ही अखिल भारतीय भाषा बनने की दक्षता है। राजाराम मोहन राय
६. हिंदी विश्व की सरलतम भाषाओं में से एक है। आचार्य क्षिति मोहन सेन
७. हिंदी ही एक भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है। डॉ. ग्रियर्सन
८. हिंदी का श्रंगार राष्ट के सभी भागों ने किया है, वह हमारी राट्रभाषा है। डॉ.राज गोपालाचार्य
९. देश को एकता के सूत्र में आबद्ध करने की शक्ति केवल हिंदी में है। श्रीमती इंदिरा गांधी
१०. हिंदी अपने गुणों से ही देश की राष्ट्रभाषा है। लाल बहादुर शास्त्री
११. राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी । पं. जवाहर लाल नेहरू

हिंदी राष्ट्र भाषा बनने के लिए समर्थ और सशक्त है :–

१. अधिकांश भारतीयों की भाषा हिंदी भाषा ही है ।
२. हिंदी भाषा वह महासागर है जिसमें कई बोलियां और भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने की क्षमता है ।

३. हिंदी का शब्द भण्डार संसार की सभी भाषाओं से भी विशाल एवं समृद्ध है ।
४. विश्व की अन्य भाषाओं में सबसे पारदर्शी भाषा हिंदी भाषा ही है ।
५. हिंदी भाषा ने ही देश को एकता के सूत्र में पिरोकर बांध रखा है ।
६. देश की आजादी का शंखनाद और गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने का कार्य हिंदी भाषा ने ही किया ।
७. विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की आधारशीला हिंदी भाषा ही है ।
८. प्रिंटमीडिया, रेडियों, टेलीविजन एवं कम्प्यूटर में इंटरनेट सेवाओं में हिंदी भाषा के प्रयोग से आज हिंदी विश्व की तीसरी उपयोगी भाषा बन चुकी है ।
९. देश में ही नहीं बल्कि विदेशों के १८० विश्वविद्यालयों में उच्चत्तर शैक्षिक स्तर पर शिक्षा दीक्षा हिंदी भाषा के माध्यम से दी जा रही है ।
१०. भारत की पहचान है हिंदी भाषा

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को समर्थ बनाने के उपाय :–

१. हिंदी भारत के अधिकांश लोगों की भाषा है इसलिए इसे राष्ट्रभाषा के रूप में अन्य भाषा–भाषी व्यक्तियों को गर्व और सम्मान के साथ इसे स्वीकार करना चाहिए क्यों कि आजादी का शंखनाद और श्रीगणेश करके गुलामी की बेड़ियों को इसी हिंदी भाषा की शक्ति ने तोड़ा था ।
२. हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा सरल, सहज, आसान, ग्रहणीय है, यह जन–जन की भाषा है जिसे शैक्षणिक स्तर के पाठयक्रम में अनिवार्य, ऐच्छिक एवं त्रिभाषा सूत्र के रूप में सरकारी स्तर पर सख्ती से लागू करना चाहिए ।
३. भारत बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश हैं इसलिए सभी भाषाओं को प्रोत्साहन हिंदी भाषा में अनुवाद द्वारा देना चाहिए उदाहरण स्वरूप दिल्ली विश्विद्यालय 'भाषा, साहित्य और संस्कृति' विषय में भारत की अन्ये भाषाओं के साहित्य का पठन–पाठन हिंदी व अंग्रेजी के माध्यम से किया जा रहा है ।प्रायोगिक विषय के तौर पर 'कार्यालयी भाषा' और 'अनुवाद' का पठन पाठन की शिक्षा दीक्षा दी जा रही है जिससे हिंदी भाषा के साथ–साथ देश की अन्य भाषाओं को भी बढ़ावा मिल रहा है ।
४. सरकारी विभागों में हिंदी की कार्यशालाओं का आयोजन समय–समय पर किया जाना चाहिए प्रेरणा और प्रोत्साहन के रूप में पुरस्कार या नकद राशि का भुगतान किया जाना चाहिए ।
५. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा विज्ञान एवं तकनीकी विषयों का अनुवाद पाठयक्रमों में किया जाना चाहिए जिससे हिंदी माध्यम से भी ऐसे विषयों की शिक्षा दी जा सके ।
६. प्रत्येक विषय की हिंदी में शब्दावली तैयार करवानी चाहिए ।
७. पाठयक्रम का माध्यिम हिंदी भाषा को ही रखना चाहिए जिससे हिंदी भाषा का ज्यादा से ज्यादा विस्तार किया जा सकें ।
८. हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए इसके सरलीकरण पर जोर दिया जाना चाहिए ।
९. रोज़गार और व्यवसाय की भाषा के रूप में हिंदी भाषा को बढ़ावा देना चाहिए ।
१०. हिंदी भाषा के विकास में विद्यार्थीगण, अध्यापकगण एवं बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है लेकिन आधी आबादी को इससे वंचित रखा जा रहा है मेरे सुझाव से हम अगर आधी आबादी (महिला वर्ग) अर्थत हमारे धर परिवार की मां, बहन, पत्नी और बेटियों को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर देंगे तो वे आपकी ही नहीं वरना वे राष्ट्र और राष्ट्र भाषा के विकास में भी अपनी सहयोगी भूमिका को बखूबी निभायेंगी ।
११. हिंदी समर्थ थी, समर्थ हैं, और समर्थ रहेंगी। क्यों कि मां कभी असमर्थ नहीं हो सकती हिंदी हमारी मां. है, जो हमें जन्म देती है, हमारा पालन पोषण करती है ।आजीवन हमारी सहायता के लिए तत्पर रहती है वो मां सनातन समर्थ और सशक्त होती है और यही कार्य हमारी हिंदी

भाषा कर रही है ।हिंदी भाषा को हम मां का दूसरा रूप मानकर आज और अभी से प्रतिज्ञा करें कि हम अपनी दोनों माताओं को समर्थ बनाने में अपना सफल योगदान देंगें ।

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के शूल ।'

संदर्भ ग्रंथ

१. हिंदी उदभव, विकास और रूप डॉ. हरदेव बाहरी पृष्ठ संख्या २६
२. वर्तमान संदर्भ में हिन्दी डॉ. मुकेश अग्रवाल पृष्ठ संख्या ७
३. हिंदी उदभव, विकास और रूप डॉ. हरदेव बाहरी पृष्ठ संख्या ३७
४. हिंदी शब्द अर्थ प्रयोग डॉ. हरदेव बाहरी पृष्ठ संख्या ६८
५. हिंदी शब्द अर्थ प्रयोग डॉ. हरदेव बाहरी पृष्ठ संख्या ६८
६. हिंदी भाषा मीडिया और सर्जनात्मक लेखन डॉ. मीना शर्मा पृष्ठ संख्या ७७
७. भाषा साहित्य और संस्कृति संपादन विमलेश कांति वर्मा

पीयूष अग्रवाल
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा), इरेडा

हाइड्रोजन

हाईड्रोजन–एक रंगहीन, गंधहीन गैस है, जो पर्यावरणीय प्रदूषण से मुक्त भविष्य की ऊर्जा के रूप में देखी जा रही है। वाहनों तथा बिजली उत्पादन क्षेत्र में इसके नये प्रयोग पाये गये हैं। हाईड्रोजन के साथ सबसे बड़ा लाभ यह है कि ज्ञात ईंधनों में प्रति इकाई द्रव्यमान ऊर्जा इस तत्पर में सबसे ज्यादा है और यह जलने के बाद उप उत्पाद के रूप में जल का उत्सर्जन करता है। इसलिए यह न केवल ऊर्जा क्षमता से युक्त है बल्कि पर्यावरण के अनुकूल भी है। वास्तव में नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय गत दो दशकों से हाईड्रोजन ऊर्जा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित वृहत् अनुसंधान, विकास एवं प्रदर्शन (आरडीएंडडी) कार्यक्रम में सहायता दे रहा है। फलस्वरूप वर्ष २००५ में एक राष्ट्रीय हाईड्रोजन नीति तैयार की गई, जिसका उद्देश्य हाईड्रोजन ऊर्जा के उत्पा्दन, भंडारण, परिवहन, सुरक्षा, वितरण एवं अनुप्रयोगों से संबंधित विकास के नये आयाम उपलब्ध कराना है। हालांकि, हाईड्रोजन के प्रयोग संबंधी मौजूदा प्रौद्योगिकियों के अधिकतम उपयोग और उनका व्यावसायिकरण किया जाना बाकी है, परन्तु इस संबंध में प्रयास शुरू कर दिये गये हैं ।

केंद्रीय बजट २०२१–२२ के तहत एक राष्ट्रीय हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन की घोषणा भी की गई है, जो हाइड्रोजन को वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग करने के लिये एक रोड मैप तैयार करेगा। इस पहल में परिवहन क्षेत्र में बदलाव लाने की क्षमता है। राष्ट्रीय हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन पहल के तहत स्वच्छ वैकल्पिक ईंधन विकल्प के लिये पृथ्वी पर सबसे प्रचुर तत्त्वों में से एक (हाइड्रोजन) का लाभ उठाया जाएगा। इस योजना से हरित ऊर्जा संसाधनों से हाइड्रोजन उत्पादन पर ज़ोर मिलेगा, भारत की बढ़ती अक्षय ऊर्जा क्षमता – हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ेगी एवं वर्ष २०२२ तक भारत के १७५ ळॅ के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्रोत्साहन मिलेगा। ज्ञात हो की नवकरणीय ऊर्जा विकास और NHM के लिये १५०० करोड़ रुपए का आवंटन भी किया गया है। हाइड्रोजन का उपयोग न केवल भारत को पेरिस समझौते के तहत अपने उत्सर्जन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करेगा, बल्कि यह जीवाश्म ईंधन के आयात पर भारत की निर्भरता को भी कम करेगा।

हाइड्रोजन ही क्यों ?

- आवर्त सारणी पर हाइड्रोजन पहला और सबसे हल्का तत्त्व है। चूँकि हाइड्रोजन का वज़न हवा से भी कम होता है, अतः यह वायुमंडल में ऊपर की ओर उठती है और इसलिये यह शुद्ध रूप में बहुत कम ही पाई जाती है।

- मानक तापमान और दबाव पर हाइड्रोजन एक गैर-विषाक्त, अधातु, गंधहीन, स्वादहीन, रंगहीन और अत्यधिक ज्वलनशील द्विपरमाणुक गैस है।
- हाइड्रोजन ईंधन एक शून्य-उत्सर्जन ईंधन है (आक्सीजन के साथ दहन के दौरान)। इसका उपयोग फ्यूल सेल या आंतरिक दहन इंजन में किया जा सकता है।
- यह अंतरिक्षयान प्रणोदन के लिये ईंधन के रूप में भी उपयोग किया जाता है।

हाईड्रोजन पृथ्वी पर केवल मिश्रित अवस्था में पाया जाता है और इसलिए इसका उत्पादन इसके यौगिकों के अपघटन प्रक्रिया से होता है। यह एक ऐसी विधि है जिसमें ऊर्जा की आवश्यकता होती है। विश्व में ९६ प्रति शत हाईड्रोजन का उत्पादन हाइड्रोकार्बन के प्रयोग से किया जा रहा है। लगभग चार प्रतिशत हाईड्रोजन का उत्पादन जल के विद्युत अपघटन के जरिये होता है। तेल शोधक संयंत्र एवं उर्वरक संयंत्र दो बड़े क्षेत्र है जो भारत में हाईड्रोजन के उत्पादक तथा उपभोक्ता हैं। इसका उत्पादन क्लोरो अल्कली उद्योग में उत्पाद के रूप में होता है। हाईड्रोजन का उत्पादन तीन वर्गों से संबंधित है, जिसमें पहला तापीय विधि, दूसरा विद्युत अपघटन विधि और प्रकाश अपघटन विधि है। कुछ तापीय विधियों में ऊर्जा संसाधनों की जरूरत होती है, जबकि अन्य् में जल जैसे अभिकारकों से हाईड्रोजन के उत्पाादन के लिए बंद रासायनिक अभिक्रियाओं के साथ मिश्रित रूप में उष्मा का प्रयोग किया जाता है। इस विधि को तापीय रासायनिक विधि कहा जाता है। परन्तु यह तकनीक विकास के प्रारंभिक अवस्था में अपनाई जाती है। उष्मा मिथेन पुनश्चक्रण, कोयला गैसीकरण और जैव मास गैसीकरण भी हाईड्रोजन उत्पादन की अन्य विधियां हैं। कोयला और जैव ईंधन का लाभ यह है कि दोनों स्थाानीय संसाधन के रूप में उपलब्ध रहते हैं तथा जैव ईंधन नवीकरणीय संसाधन भी है। विद्युत अपघटन विधि में विद्युत के प्रयोग से जल का विघटन हाईड्रोजन और ऑक्सीजन में होता है तथा यदि विद्युत संसाधन शुद्ध हो तो ग्रीन हाउस गैसों के उत्सार्जन में भी कमी आती है।

एशिया-प्रशांत उप-महाद्वीप में जापान और दक्षिण कोरिया हाइड्रोजन नीति बनाने के मामले में पहले पायदान पर हैं। वर्ष २०१७ में जापान ने बुनियादी हाइड्रोजन रणनीति तैयार की, जो इस दिशा में वर्ष २०३० तक देश की कार्य योजना निर्धारित करती है और जिसके तहत एक अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति शृंखला की स्थापना भी शामिल है। दक्षिण कोरिया अपनी 'हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था विकास और हाइड्रोजन का सुरक्षित प्रबंधन अधिनियम, २०२०' के तत्त्वावधान में हाइड्रोजन परियोजनाओं तथा हाइड्रोजन फ्यूल सेल उत्पादन इकाइयों का संचालन कर रहा है। दक्षिण कोरिया ने 'हाइड्रोजन का आर्थिक संवर्धन और सुरक्षा नियंत्रण अधिनियम' भी पारित किया है, जो तीन प्रमुख क्षेत्रों - हाइड्रोजन वाहन, चार्जिंग स्टेशन और फ्यूल सेल से संबंधित है। इस कानून का उद्देश्य देश के हाइड्रोजन मूल्य निर्धारण प्रणाली में पारदर्शिता लाना है।

भारत को अपनी अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों और प्रचुर प्राकृतिक तत्त्वों की उपस्थिति के कारण हरित हाइड्रोजन उत्पादन में भारी बढ़त प्राप्त है। सरकार ने पूरे देश में गैस पाइप लाइन के बुनियादी ढाँचे को बढ़ाने में प्रोत्साहन दिया है और स्मार्ट ग्रिड की शुरुआत सहित पावर ग्रिड के सुधार हेतु प्रस्ताव पेश किया है। वर्तमान ऊर्जा मिश्रण में नवीकरणीय ऊर्जा को प्रभावी ढंग से एकीकृत करने के लिये इस तरह के कदम उठाए जा रहे हैं। अक्षय ऊर्जा उत्पादन, भंडारण और संचरण के माध्यम से भारत में हरित हाइड्रोजन का उत्पादन लागत प्रभावी हो सकता है, जो न केवल ऊर्जा सुरक्षा की गारंटी देगा, बल्कि देश को ऊर्जा के मामले में धीरे-धीरे आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायता करेगा।

उद्योगों द्वारा व्यावसायिक रूप से हाइड्रोजन का उपयोग करने में हरित या ब्लू हाइड्रोजन के निष्कर्षण की आर्थिक वहनीयता सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। हाइड्रोजन के उत्पादन और दोहन में उपयोग की जाने वाली तकनीकें जैसे-कार्बन कैप्चर और स्टोरेज (CCS) तथा हाइड्रोजन फ्यूल सेल प्रौद्योगिकी

आदि अभी प्रारंभिक अवस्था में हैं एवं ये महँगी भी हैं। जो हाइड्रोजन की उत्पादन लागत को बढ़ाती हैं। एक संयंत्र के पूरा होने के बाद फ्यूल सेल के रख रखाव की लागत काफी अधिक हो सकती है। ईंधन के रूप में और उद्योगों में हाइड्रोजन के व्यावसायिक उपयोग के लिये अनुसंधान व विकास, भंडारण, परिवहन एवं मांग निर्माण हेतु हाइड्रोजन के उत्पादन से जुड़ी प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढाँचे में काफी अधिक निवेश करने की आवश्यकता होगी।

वर्तमान में भारत एक समायोजित दृष्टिकोण के साथ अनुसंधान और विकास में निवेश बढ़ाने, क्षमता निर्माण, संगत कानून तथा अपनी विशाल आबादी के बीच मांग उत्पन्न कर इस अवसर का लाभ उठाने के लिये एक विशिष्ट स्थान बना सकता है। इस तरह की पहल भारत को उसके पड़ोसियों और उससे भी परे हाइड्रोजन निर्यात करके सबसे पसंदीदा राष्ट्र बनने की दिशा में प्रेरित कर सकती है।

स्रोतः

१. इंडियन एक्सप्रेस

२. पत्र सूचना कार्यालय,प्रेस इंफोर्मेशन ब्यूरो (पीआईबी), नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय

रोमेश कुमार गुप्ता
उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

अभी बाकी हैं

एक आग है मेरे दिल में, जो अभी भी दहक रही है ।
और एक बारिश है कहीं, जिसमें भीगना अभी बाकी है ।।

एक घर है, जिसकी छाँव में मैं रहता आया हूँ ।
और एक बंज़र जमीन है कहीं, जिस पर भटकना अभी बाकी है।।

एक मंजिल है मेरे पास, जिसे पा लिया है मैंने ।
और एक रास्ता है कहीं, जिस पर चलना अभी बाकी है ।।

यूँ तो, अपने जज्बातो को जता चुका हूँ बातों से ।
और एक बात है कोई, जिस पर मुस्कुराना अभी बाकी है ।।

एक दुनिया है छोटी सी, जिसे घूम चुका हूँ मैं ।
और एक शहर है कोई, जिसे ढूँढना अभी बाकी है ।।

एक कहानी है मेरी, जिससे रूबरू सब हो चुके है।
और एक किस्सा है कोई, जिसे सुनाना अभी बाकी है ।।

एक किरदार है मुझमें, जो निभा रहा हूँ मैं ।
और एक अदाकारी है कहीं, जिसे सीखना अभी बाकी है ।।

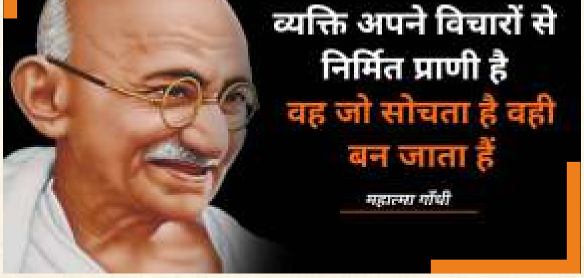

शशि गुप्ता

जिंदगी को नज़दीक से देखिए

कुछ देर यूं ही कभी खाली बैठिए।
दिमाग में जो चल रहा है चलने दीजिए।
फिकर मत करिए, बस खाली बैठिए।
जिंदगी को नजदीक से देखिए।
देखिए पत्ते कैसे हिल रहे हैं।
कबूतर कबूतरी कैसे चल रहे हैं।
बच्चे कैसे खेल रहे हैं।
वह क्या महसूस कर रहे हैं।
हवा आपके कानों में क्या कह रही है।
चींटी गड्ढे से मिट्टी कैसे निकाल रही है।
प्रकृति को महसूस करना जिंदगी है।
बैठेंगे तो पाएंगे पेड़ आपको सांसे दे रहे हैं।
आप पेड़ों को सांसे दे रहे हैं।
देखिए इस तालमेल को कैसे कर रहे हैं।
देखिए आकाश को जो आपको थाम रहा है। केवल आपको ही
नहीं हम सब को थाम रहा है।
जिंदगी कमाना खाना सोना ही नहीं है।
जिंदगी को महसूस करना जिंदगी है।
कभी अपनी जिंदगी को भी थोड़ा वक्त दीजिए। कुछ देर बस यूं ही खाली बैठिए।
जिंदगी को अपने नजदीक महसूस करिए। कभी-कभी पहाड़ों को नदियों को,
भी अपने नजदीक महसूस करिए।
जब वक्त मिले तो नजदीक जाइए।
उनके बीच जिंदगी को जी कर देखिए।
कुछ देर यूं ही कभी खाली बैठिए।

गिरिश चन्द्र शर्मा

ढाई अक्षर

मैंने कभी पढा था....
"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय,
ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।"
बहुत अथक प्रयास के बाद अब पता लगा ये ढाई अक्षर क्या है.....

ढाई अक्षर के ब्रह्मा और ढाई अक्षर की सृष्टि।
ढाई अक्षर के विष्णु और ढाई अक्षर की लक्ष्मी।
ढाई अक्षर के कृष्ण और ढाई अक्षर के बृह्मा।
ढाई अक्षर की दुर्गा और ढाई अक्षर की शक्ति।
ढाई अक्षर की श्रद्धा और ढाई अक्षर की भक्ति।
ढाई अक्षर का त्याग और ढाई अक्षर का ध्यान।
ढाई अक्षर की तुष्टि और ढाई अक्षर की इच्छा।
ढाई अक्षर का धर्म और ढाई अक्षर का कर्म।
ढाई अक्षर का भाग्य और ढाई अक्षर की व्यथा।
ढाई अक्षर का ग्रन्थ और ढाई अक्षर का सन्त।
ढाई अक्षर का शब्द और ढाई अक्षर का अर्थ।
ढाई अक्षर का सत्य और ढाई अक्षर की मिथ्या।
ढाई अक्षर की श्रुति और ढाई अक्षर की ध्वनि।
ढाई अक्षर की अग्नि और ढाई अक्षर का कुण्ड।
ढाई अक्षर का मन्त्र और ढाई अक्षर का यन्त्र।
ढाई अक्षर की श्वांस और ढाई अक्षर के प्राण।
ढाई अक्षर का जन्म ढाई अक्षर की मृत्यु।
ढाई अक्षर की अस्थि और ढाई अक्षर की अर्थी।
ढाई अक्षर का प्यार और ढाई अक्षर का युद्ध।
ढाई अक्षर का मित्र और ढाई अक्षर का शत्रु।
ढाई अक्षर का प्रेम और ढाई अक्षर की घृणा।
जन्म से लेकर मृत्यु तक हम बंधे हैं ढाई अक्षर में।
हैं ढाई अक्षर ही वक़्त में और ढाई अक्षर ही अन्त में।
समझ न पाया कोई भी है रहस्य क्या ढाई अक्षर में।

जितेंद्र मिश्रा
जीतकी कलम

माँ तुझे सलाम

"माँ तुझे सलाम"

ईश्वर का सबसे सुन्दर रूप होती है माँ
अपने खून से जो सींचती है हमे, वो होती है माँ
नौ महीने में एक ज़िन्दगी पैदा करती है माँ
हमारे लिए तो ईश्वर से बढ़कर होती है माँ
जो हमारा बचपन संवार देती है, वो होती है माँ
जो हमारी ज़िन्दगी निखार देती है, वो होती है माँ
हमे भूखा देखकर पकवानो के अम्बार लगा देती है, वो होती है माँ
हमारे फटे कपड़ो को सिलकर फिर से सजा देती है, वो होती है माँ
लोरी गाकर जो मीठी नींद सुलाती है, वो होती है माँ
जिसकी गोद में जन्नत नज़र आती है, वो होती है माँ
हमारे लिए जो दुनिया से टकरा जाती है, वो होती है माँ
हमारे सपनो के लिए खुद को मिटा जाती है, वो होती है माँ
हमारी सेवा करते नहीं थकती जो, वो होती है माँ
हमें सफल बनाने को सब करती है जो, वो होती है माँ
आइये अपनी जननी को एक छोटा सा उपहार दें
जो मांग नहीं पाई उसने, वो खुशिया उसपे वार दें
बहुत त्याग किये माँ ने , अब आई हमारी बारी है
माँ को हर हाल में खुश रखना , हम सब की ज़िम्मेदारी है
माँ को हमेशा खुश रखना , हर कष्ट दूर हो जायेगा
सच्चे दिल से माँ की सेवा से , स्वर्ग मिल जायेगा
जिसका ऊपर कोई अंत नहीं है उसे आसमाँ कहते है
जिसका नीचे कोई अंत नहीं है उसे माँ कहते है
तेरे बिना न जी पाऊँगा माँ मैं, तुम रहना सदा मेरे साथ
तुझको शत शत नमन करता हूँ, हर् पल देना आशीर्वाद
हर् पल देना आशीर्वाद , हर् पल देना आशीर्वाद .... !!

-जितेन्द्र मिश्रा #JeetKiKalam

आलर कुल्लू
सहायक प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

मदुरै रामेश्वरम अध्ययन यात्रा की यादगार लम्हें

1 जुलाई, 2002 को मैंने भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा) भारत सरकार की एक गैर बैकिंग वित्तीय संस्थान में कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के रूप में अपना कार्य आरंभ किया। इरेडा आरंभ से ही अपने श्रमशक्ति को देश-विदेशों में आयोजित होने वाले विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षण दिलाने के लिए हमेशा से ही अग्रणी रहा है जिससे इरेडा कर्मचारियों के कौशल में उतरोत्तर विकास हो सके। इसी क्रम में मुझे भी इरेडा द्वारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, सेकेंडेरी एवं उच्चर शिक्षण विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 26-28 अगस्त, 2002 को मुदुरै, तमिलनाडु में आयोजित होनेवाली ‘‘राजभाषा और वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली’’ कार्यशाला में भाग लेने के लिए नामित किया गया। कार्यशाला से संबंधित नामांकन पत्र प्राप्ति होने पर मुझे अत्याधिक खुशी हुई, क्यों कि मैं इरेडा मैने हाल ही में पदभार ग्रहण किया था और 26-28 अगस्त, 2002 को मुझे मदुरै में आयोजित होने वाली हिंदी कार्यशाला और हिंदी प्रशिक्षण के लिए जाना था। इरेडा में पहले से ही कार्यरत सहकर्मी श्री संजय कुमार सिंह ने मेरी यात्रा कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार किया और उनके मार्गदर्शन में कार्यालयी नियमानुसार मूवमेंट आदेश के लिए अनुमोदन भी प्राप्त कर लिया। मदुरै जाने के लिए उस समय तक चूंकि सीधी रेलगाड़ी नहीं थी अतः नई दिल्ली से मद्रास तक तमिलनाडु एक्सप्रेस में तृतीय श्रेणी वातानुकूलित बोगी में आरक्षित किया गया। यह रेल यात्रा मेरे जीवन की सबसे लम्बी रेल यात्रा थी। नई दिल्ली से मद्रास की दूरी लगभग 2175 किलोमीटर और चेन्नई से मदुरै की दूरी लगभग 457 किलोमीटर कुल मिलकर नई दिल्ली से मदुरै की दूरी लगभग 2632 किलोमीटर है।

मेरी किस्मत अच्छी थी कि इसी रेल से मेरे सहकर्मी श्री पी.आर. कुमारलाल, इरेडा कार्यालय में ही कार्यरत वे अपने पैतृक शहर जा रहे थे । वे मदुरै के ही रहनेवाले हैं और वे इरेडा में ही पिछले कई वर्षों से कार्यरत हैं, उनके साथ मिलने से मेरी यात्रा को पंख लग गए। हम दोनों तमिलनाडु एक्सप्रेस से नई दिल्ली से रात्रि 10:30 बजे प्रस्थान करते हुए रातभर की यात्रा, दिनभर और फिर रात भर की यात्रा करते हुए तीसरे दिन सुबह-सुबह मद्रास पहुंचे। इतनी लम्बी रेल की यात्रा मेरे लिए काफी सुखद रहा दिन तो मुझे पूरी दक्षिण भारत का दीदार करने का सुअवसर मिला। हमारा रेलगाड़ी दो रात और एक दिन की लम्बी यात्रा के बाद मद्रास रेलवे स्टेशन पहुंचा। इस यात्रा के मध्य में मुझे उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश की संक्षिप्त झांकी भी मिल गई। ट्रेन में इडली, ढ़ोसा आदि दक्षिण भारतीय व्यंजन परोसे गए इन सभी व्यंजनों का स्वाद लेने का मौका भी मिला। मेरे साथ सहकर्मी श्री पी.आर. कुमार जी जो सारथी रहे मुझे किसी प्रकार की अजनबी महसूस नहीं हुआ। चेन्नई सेंट्रल रेलवे स्टोशन, अब पुरातत्व तलाईश्वीर डॉ. एमजीआर सेंट्रल रेलवे स्टेरशन है। यह चेन्नई

महानगर की पहचान है, इसका निर्माण परतंत्र भारत के समय हुआ है। यह एक पुरानी रेलवे स्टेनशनों में एक है। यहां की साफ-सफाई और रख-रखाव काफी अच्छी है। प्रतीक्षालयों में आराम से अपना प्रतीक्षा का समय व्यतीत किया जा सकता है। हमदोनों ने एक ओटो से एग्मोर रेलवे स्टेशन पहुंचे। रेल में यात्रा करते हुए थोड़ा-बहुत दक्षिण भारतीय व्यंजन का स्वाद ले चुका था मैंने कुमारलाल जी से कहा ''सरजी मुझे किसी रेस्तरा ले चलिए ताकि मैं मद्रासी व्यंजन का स्वाद ले सकूँ इसके लिए सारा खर्च मेरे ओर से रहेगा।'' उन्होंने मुझे रेलवे स्टेशन के बगल के एक होटेल में ले गए जहां पर विभिन्न प्रकार के दक्षिण भारतीय व्यंजन की खुशबू आ रही थी। श्री कुमारलालजी ने स्वादिष्ट व्यंजनों का ऑडर दिया हम दोनों ने भरपेट मद्रासी व्यंजन का लुफत उठाया।

एग्मोर रेलवे स्टेभशन अपेक्षित एक छोटा स्टेनशन है किन्तु बिलकुल साफ-सुथरा । यहाँ पर गर्मा-गरम दूध भी मिलता है, चाय के बदले हमदोनों ने एक-एक ग्लास दूध भी पीया । मदुरै के लिए दोनों की रेलगाड़ी अलग-अलग थी हम दोनों ने अपनी-अपनी ट्रेन ली । एग्मोर से मदुरै की दूरी लगभग 457 किलोमीटर है । अगस्त का महीना दक्षिण भारत के लिए गर्मी का ही मौसम होता है । रेलगाड़ी छुक-छुक करते हुए हाथी की तरह दहाड़ते हुए अजगर सांप की तरह फूंकार मारते हुए मेरी रेल अपनी मंजिल की ओर तीव्र गति से बढ़ने लगी। मैं दक्षिण भारत यानी तमिलनाडु का दीदार करते हुए आगे बढ़ रहा था । बीच-बीच में नारियल और ताड़ के पेड़ रेललाइन के चारों ऐसा लग रहा था मानो वे मेरे स्वागत के लिए ही खड़े हों । आखिरकार मैं अपनी मंजिल मदुरै रेलवे स्टेनशन पहुंच गया और एक ओटो रिक्शा लेकर कार्यशाला केन्द्र, पार्क इन होटल जा पहुंचा । स्वागत अधिकारी द्वारा मुझे कमरा आवंटित किया गया । मैं अपने आवंटित कमरे में प्रवेश करने के उपरांत सबसे पहले ईश्वंर को धन्यवाद दिया कि उन्हीं की असीम कृपा से मेरा यह यात्रा सुखद और सुहाना रहा ।

26 अगस्त और 27 अगस्त, 2002 दोनों दिन हिंदी कार्यशाला और प्रशिक्षण सुबह 10 बजे से लेकर शाम के चार बजे तक सत्र था। अनुभवी और वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सत्र-वार हमें प्रशिक्षित किया जाता था। भारत के मंत्रालयों एवं कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रगति के लिए तौर-तरीके के संबंध में बतलाया गया । शाम चार बजे कार्यशाला समापन होने पर मैं अन्य प्रशिक्षिणुओं के साथ मदुरै भ्रमण एवं सैर-सपाटे के लिए निकल पड़ते थे। चन्द घण्टों का व्यतीत किया गया समय अति स्मरणीय रहा था। मदुरै, तमिलनाडु का प्रमुख शहरों में से एक है मदुरै शहर में अनेक देवी-देवताओं के अनेक भव्य मंदिर है, इसी कारण इस शहर को दक्षिण भारत का टेंपल सिटी भी कहा जाता है । यह शहर वैगई नदी के तट पर बसा है और यह कभी पांडव राजवंशों का शासन रहा था। यह पुराना शहर तमिलनाडु राज्य का एक महत्वंपूर्ण सांस्कृतिक और व्यावसायिक केन्द्र है। यहां का विश्व प्रसिद्ध मीनाक्षी मंदिर मुख्य आकर्षण का केन्द्र है। इस मंदिर की ऊंची गोपुरम और दुर्लभ मूर्तिशिल्प श्रद्धालुओं और सैलानियों को आकर्षित करते हैं। इसके अलावा मदुरै में कई प्रसिद्ध तीर्थस्थल और दर्शनीय स्थल है, जैसे मदुरै का प्राचीन अलागर कोइल मंदिर, कूडल मंदिर, धार्मिक स्थल मरियम्मान तप्पामकुलम, सेंटमैरीज कैथेड्रल आदि है।

इस संस्थान की ओर से हमें एक दिन की शैक्षणिक भ्रमण के लिए रामेश्वरम ले जाया गया । हमारी यात्रा बस से थी । हम करीब 50-55 के करीब थे। मदुरै से रामेश्वरम की दूरी लगभग 175 किलोमीटर है। बस की यात्रा लगभग तीन घण्टों में पूरी हुई। बस यात्रा के दौरान ही मुझे दक्षिण भारत की ग्रामीण इलाकों का दीदार करने का सौभाग्य प्राप्त। हुआ। ताड़ के पेड़, खजूर आदि वृक्षों से बनी हट आदि भी देखने का मिला, मदुरै की यह दक्षिण इलाका अपेक्षाकृत कम विकसित क्षेत्र है, तीन साढ़े तीन घण्टे की बस यात्रा करके आखिरकार हमारी टीम तमिलनाडु की दक्षिणी छोर पर बसा रामेश्वरम पहुँच गया।

रामेश्वेरम चेन्नाई से लगभग 425 मील दक्षिण-पूर्व और मदुरै से दक्षिण में हिंद महासागर और बंगाल

की खाड़ी से चारों ओर से घिरा हुआ एक खुबसूरत शंख के आकार का एक टापू है। यहाँ पहुँचने के लिए सड़क और रेल मार्ग की सुविधा है। कहा जाता है कि यह पहले भारत की भूमिखण्ड से जुड़ा हुआ था किन्तु कलांतर में सागर की लहरों और धाराओं ने इस मिलान वाली भूभाग को काट डाला जिससे वह चारों ओर समुद्र की पानी से घिरकर द्वीप बन गया है। रामेश्वरम हिंदुओं का एक पवित्र तीर्थ स्थान है। रामेश्वरम मंदिर चार धामों में से एक प्रमुख मंदिर है। इसपर स्थापित शिवलिंग को 12 ज्योतिलिंगों में से एक माना जाता है ।

रामेश्वरम का यह मंदिर अपने आप में एक आकर्षण है। यहां का गलियारा विश्व का सबसे बड़ा गलियारा माना जाता है। गोपुरम, मंदिर के प्रवेश द्वार से लेकर मंदिर का हरेक स्तंभ, हरेक दीवार वास्तुकला की दृष्टि से भी अद्भुत और बेजोड़ हैं ।

दूसरा महत्वपूर्ण है रामसेतु। यह सेतु समुद्र में आज भी आदि-सेतु के अवशेष के रूप में दिखाई देते हैं । कहा जाता है लंका पर चढ़ाई करने के पहले वानर सेना की अगुवाई और मदद से इस सेतु का निर्माण किया था लेकिन लंका पर विजयी प्राप्त करने के पश्चात् जब विभीषण को लंका का सिंहासन सौंप दिया गया तो विभीषण के अनुरोध पर धनुष कोटि नामक स्थान पर इस सेतु तो तोड़ दिया गया ताकि कोई लंका से हिंदुस्तान न आ सके और कोई हिंदुस्तान से लंका में न आ जा सके। इसके अलावा और कई दर्शनीय स्थल हैं जो हमारे पौराणिक गाथाओं और धार्मिक मान्यताओं से जुड़े हुए हैं।

भारत के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति अबुल जाकिर जैनुल अब्दीन अब्दुेल कलाम संक्षिप्त् में ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को कौन नहीं जानता है। इसका जन्म भी 15 अक्टुबर, 1931 को रामेश्वरम की पावन धरती पर हुआ था। उनका बचपन और प्रारंभिक शिक्षा भी यही पर हुआ। उनके पिताजी एक नाविक और माताजी गृहणी थीं। उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं था , इसलिए उन्हें छोटी उम्र से ही काम करना पड़ा। पिताजी की आर्थिक मदद के लिए बालक कलाम स्कूल के बाद समाचार पत्र वितरण का कार्य करते थे। कलाम आगे की पढ़ाई करने गए और एक दिन वैज्ञानिक, मिसाइलमैन और राष्ट्र पति भी बने। युवकों में काफी मानते थे कि हर किसी का एक सपना जरूर होना चाहिए। हमें लगातार सीखना चाहिए। हमें मेहनत करना चाहिए। उनका सरल व्यवहार सादा जीवन था। उनके विचार आज भी युवा पीढ़ी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं ।

इस पावन टापू और डॉ. कलाम की जन्मभूमि का दीदार करते हुए हमारी पूरी टीम अपनी-अपनी यादगार की झोली में अद्भूत दृश्य, चिरस्मकरणीय स्मृति, सीप, गृह सजावट की कई वस्तुएं समेटकर फिर से रामेश्वरम से मदुरै लौट पड़े। वास्तव में यह स्मरणीय यात्रा जिस प्रकार समुद्र की लहर किनारे को छूती है इसी प्रकार यादों रूपी लहर उस यादगार क्षण को मुझे स्मरण दिलाती रहती है ।

तुलसी
वरिष्ठ निजी सचिव, इरेडा

भारत माता की बेटी

भारत माता की बेटी, माँ हिंदी की परछाई हूँ,
अपनी कविता से अपना परिचय करवाने आई हूँ ।
घर में तुलसी-मंदिर दुर्गा-रण में लक्ष्मी बाई हूँ,
भारत माता की बेटी, माँ हिंदी की परछाई हूँ,

तोड़ बंदिशें पंख खोल के ऊंची उड़ती आई हूँ,
लहराते आँचल में ढेरों इंद्रधनुष ले आई हूँ ।
जितना बिखरूँ उतना निखरूँ, मेहंदी सा गुण पाई हूँ ।
भारत माता की बेटी, माँ हिंदी की परछाई हूँ,

साँस का दीपक-धाम सुनहरी-भोर बनी अंगडाई हूँ,
शीत में सूरज की तरुणाई, गर्मी में पुरवाई हूँ ।
बनके गंगा अपनों को भव पार कराती आई हूँ ।
भारत माता की बेटी, माँ हिंदी की परछाई हूँ,

मैं ही गीत-रागिनी-सरगम, बांसुरी हूँ-शहनाई हूँ,
प्रणय रुक्मीणी-प्रेम राधिका-भक्ति में मीराबाई हूँ ।
दो वंशों को साथ बढ़ाने वाली दिव्य इकाई हूँ ।
भारत माता की बेटी, माँ हिंदी की परछाई हूँ,

हजारी लाल
वरिष्ठ निजी सचिव, इरेडा

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर हे हरि, डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक ॥

- माखनलाल चतुर्वेदी
(संकलन)

इरेडा कर्मियों द्वारा हिंदी पखवाड़ा के दौरान 'हिंदी भाषा' पर लिखी गई स्वरचित कविताएं

श्री मनीष चन्द्र
प्रमुख प्रबंधक (विधि) इरेडा

हिंदी भाषा

कहां फँसा मैं
ये क्या विधि का विधान है
हिंदी से प्रेम इतना,
अंग्रेजी में विधि का ज्ञान है ।
कानूनविद् की प्रिय अंग्रेजी
हिन्दी जन की बोली है ।
न्याय भेद खत्म करेगी
हिन्दी वह हमजोली है ।
अंग्रेजी में विधि इस दौर में
थोपी जा रही अंग्रेजी शोर में,
आधुनिकता की कहते इसे जान
छीन रहे है हिन्दी का रोज मान ।
कहां फँसा मैं
ये क्या विधि का विधान है
हिंदी से प्रेम इतना,
अंग्रेजी में विधि का ज्ञान है ।
भाषा जब सरल बहती
जीवन और न्याय संग चलती
भाषा जन मानस की संपदा
सरल रहती अभिव्यक्ति सदा ।
कब होगा पूरा गांधी का सपना
स्वराज्य और सर्वन्याय हो अपना
ग्रामीण लोग न हो न्याय से वंचित
हर दोषी और अत्याचारी हो दंडित ।
कहां फँसा मैं
ये क्या विधि का विधान है
हिंदी से प्रेम इतना,
अंग्रेजी में विधि का ज्ञान है ।

कुमार सूरज
प्रबंधक (विधि), इरेडा

हिंदी भाषा

भारत में जन्मा हूँ, हिन्द ने दिया हमें स्थान ।
हिन्दी हमारी भाषा बनी, जीवन में दी अलग पहचान ।।

हिन्दी हमारी अभिव्यक्ति है, भाषा है हमारी शक्ति है ।
निरक्षर को साक्षर बनाकर, करना है हमें इसका सम्मान ।।

आपस में मिलकर रहना, हिन्दी ने हमें सिखाया है ।
दूसरी भाषाओं को अंगीकार कर, इसने अपने गले लगाया है ।।

सभी धर्म और जातियाँ वाले, हिन्दी बोले जाते हैं ।
विभिन्नता में एकता का, पाठ हमें सिखाते हैं ।।

आगे बढ़ो आधुनिक बनो, सफल बनो ए नौजवान ।
पर तुम कभी भूल न जाना, हिन्द और हिन्दी का करना सम्मान ।।

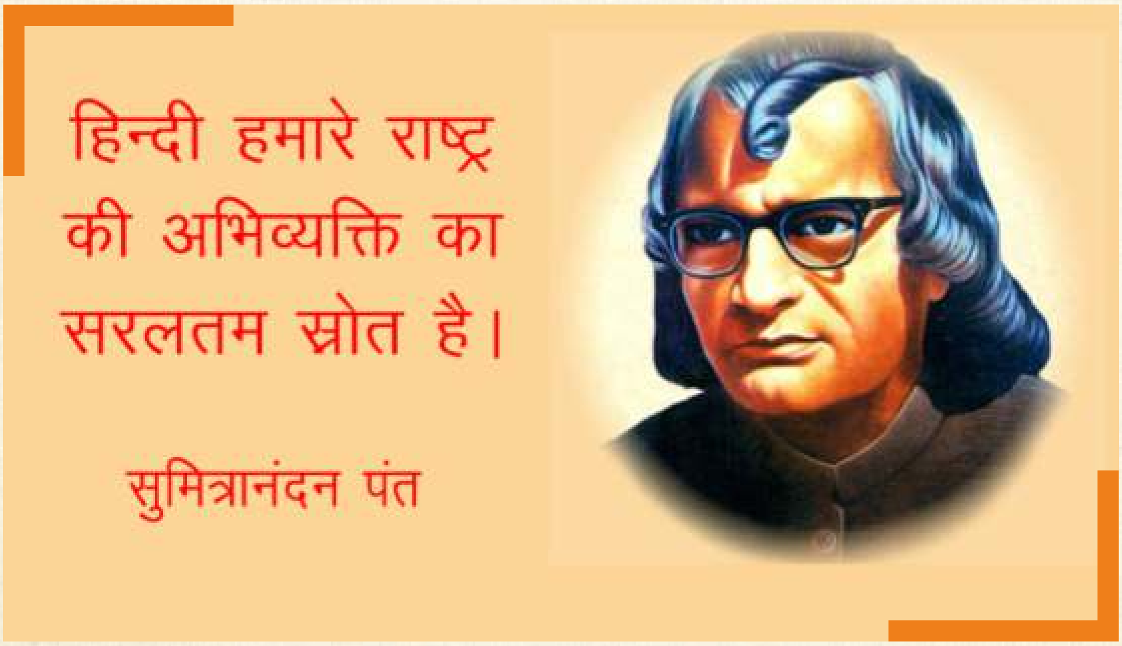

अंकित द्विवेदी
प्रबंधक (विधि), इरेडा

हिन्दी है मेरी भाषा

मैं हूँ हिंदुस्तानी और हिन्दी है मेरी भाषा,
रंग-रूप या जाती-धर्म से नहीं है इसका नाता,
जग मे हो इसका प्रसार यही है मेरी अभिलाषा ।
मैं हूँ हिंदुस्तानी और हिन्दी है मेरी भाषा।।

उत्तर हो या दक्षिण, पूरब हो या पश्चिम,
देश विदेश मे हिंदी का ही परचम है लहराता
मैं हूँ हिंदुस्तानी और हिन्दी है मेरी भाषा।।

100 बोलियों मे भी हिन्दी की बोली है अनमोल,
हिन्दी ने ही सीख दी है की तोल मोल के बोल,
आदर और सम्मान करें सब इसका, चाहे इसरो हो या नासा,
मैं हूँ हिंदुस्तानी और हिन्दी है मेरी भाषा।।

अभिव्यक्ति की आजादी है, जग मग ज्योत जलाएंगे,
भारत के हम वासी हैं, भारत की गाथा गाएँगे,
हिन्दी के उत्थान में ही है अब मेरी जिज्ञासा,
मैं हूँ हिंदुस्तानी और हिन्दी है मेरी भाषा।।

राज पशु है सिंह और राज पक्षी है मोर
राज ध्वजा है तिरंगा और हिन्दी है राजभाषा
यही है पथ प्रदर्शक सबकी और यही है आशा,
मैं हूँ हिंदुस्तानी और हिन्दी है मेरी भाषा।।

संजय कुमार आर्य
प्रबंधक (आईटी), इरेडा

हिंदी भाषा

हिंदी भाषा, प्राचीन भाषा
संस्कृत भाषा से उद्गम भाषा ।
लिपि जिसकी देवनागरी है ।
सभी भाषाओं में, सबसे सभ्य और सरल भाषा
ब्रज, बुंदेली, बघेली और अवधी भाषाओं ने मान बढ़ाया ।
जन-जन तक पहुँचाया ।

राजभाषा है हमारी पर, कहलाती है राष्ट्रभाषा
गर्व है हमें हमारी हिंदी भाषा पर
जन लोगों की भाषा, जन आन्दोलनों की भाषा
अ, आ, इ, ई, क, ख, ग शब्दों और मात्राओं की
वैज्ञानिक भाषा, इसलिए लगती है प्यारी भाषा
भारत वर्ष में अनेकों भाषाएँ व बोलियां है
पर हिंदी भाषा सबको पिरोती एक माला में ।
प्रत्येक वर्ष 14 सितंम्बर को जन्मदिवस मनाया जाता है ।
पर लगता है प्रत्येक दिन तुम्हारा जन्म दिन है ।

व्यवहार की, गुण की, बोली की, शब्दों की
भावनाओं की, संस्कृति की, एकता की ।
ऐसी है हमारी प्यारी हिंदी भाषा ।
संयुक्त राष्ट्र में रूतबा दिखाया, विश्व में
अपना मान बढ़ाया ।
हिंदी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता
जैसी लिखी, बोली वैसी ही समझी जाती भाषा ।

उमेश कुमार यादव
उप प्रबंधक (तकनीकी), इरेडा

हिंदी भाषा

यूँ तो कई भाषाएं हैं इस नम-तल में
हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं है
हिंदुस्तान का श्रृंगार है हिंदी
बिस्मिल का अंगार है हिंदी
गांधी का आह्वान है हिंदी
दिनकर की रश्मिरथी तो प्रेमचन्द का गोदान है हिंदी
हम सबकी पहचान है हिंदी ।

यूँ तो काम अंग्रेजी से भी चलता है
पर ''अबे यार'' का मजा 'हे डयुड' में कहा आता है
तू, तूम, आप का मजा सिर्फ 'यु' (you) से कहा आता है
इसमें कोई स्मॉल और कोई कैपिटल लैटर नहीं होता
सब बराबर होते है कोई किसी से बैटर नहीं होता
हिंदी की तो बात ही निराली, एक शब्द के कितने मायन (प्रेम)

मां करे तो वात्सल्य,
भाई करे तो स्नेह
पिता करे तो दुलार
पत्नी करे तो प्यार
भक्ति करे तो अनुराग
दोस्त करे तो प्रीत
प्रेमी करे तो मोहब्त

हिंदुस्तान का हुंकार है हिंदी
भारत का संस्कार है हिंदी
हिंदी है तो हमारा अस्तित्व है
हम सब का जय-जयकार है हिंदी

आशीष अग्रवाल
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा), इरेडा

हिंदी भाषा

हिंदी मेरे मन की बोली है ।
त्योहारों में ज्यूँ रंगों भरी होली है ।
रचनाओं के महासागर से भरी इसकी झोली है
प्रेम त्याग वैराग्य ज्ञान और हँसी-ठिठोली है ।

हिंदी में संगीत का भाव है ।
हिंदी में सबके प्रति प्यार है ।
हिंदी में ईश्वर का वास है ।
हिंदी में एक मार्मिक प्रार्थना है ।
हिंदी में बोला हर बोल सुहावना है ।

ईश्वर की रची दुनिया में अनमोल है हिंदी ।
मानवता को जोड़े ऐसी कोमल डोर है हिंदी ।
जिसका है ना किसी भाषा से द्वेष ऐसी है हमारी हिंदी ।
जिसके कथन से मिले ह्रदय में प्रवेश ऐसी है हमारी हिंदी ।

हमारे रक्त में सम्मिलित है हिंदी ।
हमारे व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है हिंदी ।
आओ सब मिलकर अपनाए हिंदी ।
इसके बिना सूनी सूनी है जिंदगी ।

दिव्यांशु दुबे
उप प्रबंधक (विधि), इरेडा

हिंदी भाषा

हिंदी भाषा पर है हमें अभिमान
फिर भी करते हम अंग्रेजी का गुणगान
जिस भाषा ने हमें पहचान दिलाई
आज बच्चों को सिखाते इससे बचने में है भलाई ।
व्यथा ऐसी हिंदी की बात करो हिंदी में होता तिरस्कार
और अगर नहीं करो तो होता है देशभक्तों का हाहाकार

मां नाम का अपनापन खो गया ।
क्योंकि अब वो हमारे समाज के आदर्श में मौम हो गया ।

होता है एक हफ्ते हिंदी का अखाड़ा
खाती धोबीपछाड़ साल भर हिंदी फिर काहे का पखवाड़ा

उठो राष्ट्रावादियों संकल्प जरूरी है
जेन्टलमेन मानको से हिंदी बचाना जरूरी है

भारत की संस्कृति की बेटी से ना करो इतना दुरव्यवहार
दाल रोटी खाये बेटी, मेहमान खाये पिज्जा बर्गर

जहां भी जाओ जग में हिंदी का बोलबाला है ।
कोई पूछ ले दो अक्षर जो बच्चा-बच्चा देश का रोनेवाला है ।
जब तक हम हिंदी को उसके उचित स्थान पर नहीं पहुँचाएंगे पहुँचाएंगी
देशभक्त तो दूर हिन्दुस्तानी भी नहीं कहलाएँगे कहलाएँगी

अतः एक विनती मेरी स्वीकार कीजिए
देश की धरोहर को बचाने का संकल्प लिजिए
अंग्रेजी बसावट के बाहर आने की जहमत कीजिए
बच्चों को पुनः क, ख, ग, घ पढ़ाने की मेहनत कीजिए ।।

जोगिन्दर कौर
उप प्रबंधक (सचिव),इरेडा

हिंदी भाषा

राष्ट्र भाषा हिन्दी है हमारी पर
अंग्रेजी है हमें ज्यादा प्यारी
मां से ज्यादा मौसी प्यारी
अंग्रेजी है हिन्दी पर भारी
यहां मैं कहना चाहूँगी
हिंदी से है हिन्दुँस्तान
भाषा है मेरी पहचान
क्यों हम सोचें है अपमान
हिंदी भाषा का इस्तेमाल
क्यों हम भूलें इसी अंग्रेजी ने
वर्षों पहले बनाया हमें गुलाम

हिंदी है हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा
कितना प्यारा कितना अच्छा है यह नारा
मां में जितना प्यार छिपा है
Mom में कहां है आज
भाई–बहन के रिश्ते भी अब
Bro – Sis के मोहताज़ हुए
अंग्रेजी का हम पर असर हो गया
हिंदी का मुश्किल सफर हो गया
देवनागरी लिपि से निकली
ये गौरव का अहसास है
दुनियां में तीसरे नंबर पर आई
कुछ तो बात इसमें खास है ।
वैसे तो विश्व में भाषाएँ बहुत है
पर हिंदी का वजूद कुछ खास है ।
भाषा ये महान है ।
हिंदी से ही हिन्दुस्तान है ।
आओ मिलकर जगाये स्वाभिमान
हिंदी है हम सबका अभिमान
मातृभाषा को दे सम्मान
अब मैं आपसे इजाजत चाहती हूँ ।
हिंदी की सबसे हिफाजत चाहती हूँ ।

हिंदी पखवाड़ा, २०२० के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागी की सूची

दिनांक 15-09-2020 कम्प्यूटर पर प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता

रूचिका दराल	प्रथम	5000/- + 2500/- हिंदी पुस्तकें
प्रियंका एम.रावल	द्वितीय	4000/- + 2000/- हिंदी पुस्तकें
द्विव्यांशु दुबे	तृतीय	3000/- + 1500/- हिंदी पुस्तकें
ऐश्वर्या मिश्रा	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें

दिनांक 16-09-2020 चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता

संकेत कुमार जैन	प्रथम	5000/- + 2500/- हिंदी पुस्तकें
सौरभ गर्ग	द्वितीय	4000/- + 2000/- हिंदी पुस्तकें
धीरा शर्मा	संयुक्त तृतीय	1500/- + 750/- हिंदी पुस्तकें
रुचिका दराल		1500/- + 750/- हिंदी पुस्तकें
एस.कृष्ण-कुमार	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
संजय कुमार आर्य	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
अंकिता गुप्ता	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
आशीष अग्रवाल	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
रोमेश कुमार गुप्ता	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें

दिनांक 21-09-2020 समाचार वाचन प्रतियोगिता

बिबेक बिशाल मेहेना	प्रथम	5000/- + 2500/- हिंदी पुस्तकें
मधुचंदा ठाकुर	द्वितीय	4000/- + 2000/- हिंदी पुस्तकें
पीयूष अग्रवाल	तृतीय	3000/- + 1500/- हिंदी पुस्तकें
संकेत कुमार जैन	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
मनीष चन्द्रा	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
दीपक चन्द्र फुल्लारा	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
सौरभ गर्ग	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
गुंजन महानी	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें

दिनांक 22-09-2020 यात्रा वृतांत प्रतियोगिता

धीरा शर्मा	प्रथम	5000/- + 2500/- हिंदी पुस्तकें
जोगिन्द्र कौर	द्वितीय	4000/- + 2000/- हिंदी पुस्तकें
पीयूष अग्रवाल	तृतीय	3000/- + 1500/- हिंदी पुस्तकें
पीयूष कुमार अरोड़ा	प्रोत्साहन	2000/- + 1000-/ हिंदी पुस्तकें
गुंजन महानी	प्रोत्साहन	2000/- + 1000-/ हिंदी पुस्तकें
सुप्रीत कौर	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
रोहित गुप्ता	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें

ज्योति यादव	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें

दिनांक 23-09-2020 कविता पाठ प्रतियोगिता

अंकित द्विवेदी	प्रथम	5000/- + 2500/- हिंदी पुस्तकें
बिबेक बिशाल मेहेना	द्वितीय	4000/- + 2000/- हिंदी पुस्तकें
दिव्यांशु दुबे	तृतीय	3000/- + 1500/- हिंदी पुस्तकें
जोगिन्द्र कौर	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
मनीष चन्द्र	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
सुप्रीत कौर	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
संजय कुमार आर्य	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें
उमेश कुमार यादव	प्रोत्साहन	2000/- + 1000/- हिंदी पुस्तकें

वर्ष 2020 - 21 के दौरान इरेडा में राजभाषा गतिविधियां

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 28-07-2020 (मंगलवार) को कोविड–19 और समाजिक दूरी का ध्याान में रखते हुए इस बार इरेडा में सभी इरेडा कर्मियों के लिए वर्चुअल कार्यशाला विषय ''राजभाषा के प्रावधानों एवं हिंदी में सरलता से कार्य कैसे करे ?'' का आयोजन किया गया । कार्यशाला का शुभारंभ सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा संकाय श्रीमती चन्द्रकला मिश्र, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक, बीएचईएल के स्वागत से किया गया । उसके उपरांत सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा कार्यशाला संकाय का परिचय कराया गया ।

कार्यशाला में इरेडा कर्मियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया । कार्यशाला में इरेडा कर्मियों को पीपीटी के माध्यम से राजभाषा नियम/अधिनियम के बारे में जानकारी दी गई तथा इसके साथ ही हिंदी में कैसे सरलता से कार्य किया जाएं उसके बारे में भी बताया गया ।

कार्यशाला सत्र के अंत में इरेडा कर्मियों की राजभाषा नियम/अधिनियम एवं हिंदी में किस तरह से कार्य किया जाएं से संबंधित समस्याआओं को पूछा गया । कार्यशाला के उपरांत इरेडा के उपस्थित कर्मियों द्वारा सत्र की सराहना की गई । इस प्रकार यह कार्यशाला काफ़ी उत्साहवर्धक एवं लाभदायक रही । अंत में सुश्री संगीता श्रीवास्तव द्वारा कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों/ कर्मचारियों को धन्यवाद दिया ।

इरेडा में 14 से 28 सितम्बर 2020 तक हिंदी पखवाड़ा, 2020 का भव्य आयोजन

प्रत्येक वर्ष की भांति, भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार इस वर्ष भी इरेडा में सितम्बर माह में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 14 से 28 सितम्बर 2020 तक मनाया गया। इस उपलक्ष्य में दिनांक 14 सितम्बर को इरेडा के कार्पोरेट कार्यालय, एकेबी बोर्ड रूम में कोविड-19 को देखते हुए तथा सोशल डिस्टेंसिंग को ध्यान में रखते हुए वर्चुअल माध्यम से श्री प्रदीप कुमार दास, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री चिंतन शाह, निदेशक (तकनीकी) और अन्य उच्च अधिकारियों द्वारा दीप जलाकर हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया गया। प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा), सुश्री संगीता श्रीवास्तव ने समारोह के संचालन की शुरूआत करके वीसी के माध्यम से सभी उपस्थित कार्मिकों को हिंदी दिवस की बधाई दी और उसके उपरांत निदेशक (तकनीकी), श्री चिंतन शाह ने माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार का हिंदी संदेश का पाठ किया और सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी। तत्पश्चात डॉ. आर.सी.शर्मा, महाप्रबंधक (वित्त तथा लेखा) एवं सीएफओ द्वारा माननीय नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री का हिंदी संदेश पढ़ा और श्री प्रदीप कुमार दास, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने हिंदी दिवस पर संदेश जारी किया । इसके उपरांत श्री प्रदीप कुमार दास, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा इरेडा की हिंदी ई-पत्रिका अक्षय क्रांति का विमोचन किया गया ।

हिंदी दिवस के अवसर पर इरेडा में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन इरेडा के कॉर्पोरेट कार्यालय के बोर्ड रूम से वर्चुअल माध्यम से श्री दीपक गुप्ता, हास्य व्यंग्य कवि, गज़लकार एवं मंच संचालक द्वारा अपनी टीम के साथ कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन इरेडा में इस आशय से किया गया ताकि इस लाफ्टर थेरेपी का लाभ उठाते हुए कोविड महामारी के समय लोग भयग्रस्त एवं तनाव में ना रहे तथा स्वस्थ और मस्त रह सकें । हास्य कवि सम्मेलन में इरेडा कर्मियों के अलावा अन्य उपक्रमों के अधिकारियों द्वारा भी वर्चुअल माध्यम से इसका लाभ उठाया। पखवाड़ें के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं और 02 कार्यशालाओं का आयोजन श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्ववयन), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नियमों की जानकारी पर वीसी के माध्यम से किया गया था तथा सभी इरेडा कर्मियों ने इसमें भाग लिया। दिनांक २८.०९.२०२० को हिंदी पखवाड़ा समापन में सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा विजेताओं के परिणाम बताए गए तथा हिदी पखवाड़े को सफल बनाने हेतु सभी को धन्यवाद दिया गया । इसके उपरांत निदेशक (तकनीकी) तथा महाप्रबंधक (मानव संसाधन) द्वारा भी सभी विजेताओं को बधाई दी तथा सभी से हिंदी में और अधिक कार्य करने के लिए कहा गया । उसके उपरांत सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन देकर पखवाड़े का समापन किया गया ।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 16-12-2020 को पूर्वाह्न 11-00 बजे सभी इरेडा कर्मियों के लिए वर्चुअल माध्यम से हिंदी कार्यशाला विषय ''स्वतंत्र भारत में हिंदी कार्यान्वयन की अनिवार्यता'' का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा संकाय श्री पूरनचंद टंडन, प्रोफेसर के स्वागत से किया गया। उसके उपरांत सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा कार्यशाला संकाय का परिचय कराया गया ।

कार्यशाला में इरेडा कर्मियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया । कार्यशाला में इरेडा कर्मियों को हिंदी की महत्व के बारे में बताया कि हिंदी का क्या महत्व है और अनुच्छेद 343 में संघ की राजभाषा हिंदी होगी इसके अतिरिक्त उन्हों ने यह भी बताया कि अनुच्छेद 344 (1) और 351 में अष्टम अनुसूची में 22 भाषाएं है। इसके साथ उन्होंने कई कवियों के उदाहरण भी दिए तथा हिंदी कार्यान्वयन की अनिवार्यता को बताया ।

कार्यशाला सत्र के अंत में इरेडा कर्मियों को हिंदी का प्रयोग किस तरह से किया जाएं उसके बारे में

बताया तथा इरेडा कर्मियो से हिंदी से संबंधित समस्याओं को पूछा गया। कार्यशाला के उपरांत इरेडा के उपस्थित कर्मियों द्वारा सत्र की सराहना की गई। इस प्रकार यह कार्यशाला काफ़ी उत्साहवर्धक एवं लाभदायक रही। अंत में सुश्री संगीता श्रीवास्तव द्वारा कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों/ कर्मचारियों को धन्यवाद दिया।

नराकास के तत्वावधान में इरेडा द्वारा आयोजित 'चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता' की रिपोर्ट

दिनांक 22 दिसम्बर, 2020 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम- I), दिल्ली के तत्वावधान में भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा) द्वारा वर्चुअल माध्यम से 'चित्र अभिव्यक्ति' प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में विशेषज्ञ श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षे का का, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा किया गया । प्रतियोगिता में विभिन्न उपक्रमों (पीएसयू)से आए हुए कुल १४ प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया ।

सबसे पहले सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा विशेषज्ञ श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) का स्वागत किया गया । इसके उपरांत सभी प्रतिभागियों को प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दी गई ।

चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में एक-एक करके सभी उपक्रमों से वर्चुअल माध्यम से उपस्थित प्रतिभागियों ने बढ़चढ कर भाग लिया तथा सभी प्रतिभागियों द्वारा प्रतियोगिता के आयोजन की प्रशंसा की गई । इसके उपरांत विशेषज्ञ द्वारा भी इस प्रतियोगिता के आयोजन की सराहना की गई। अतः प्रतियोगिता का समापन प्रमुख प्रबंधक(राजभाषा) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन देकर किया गया ।

इरेडा
IREDA

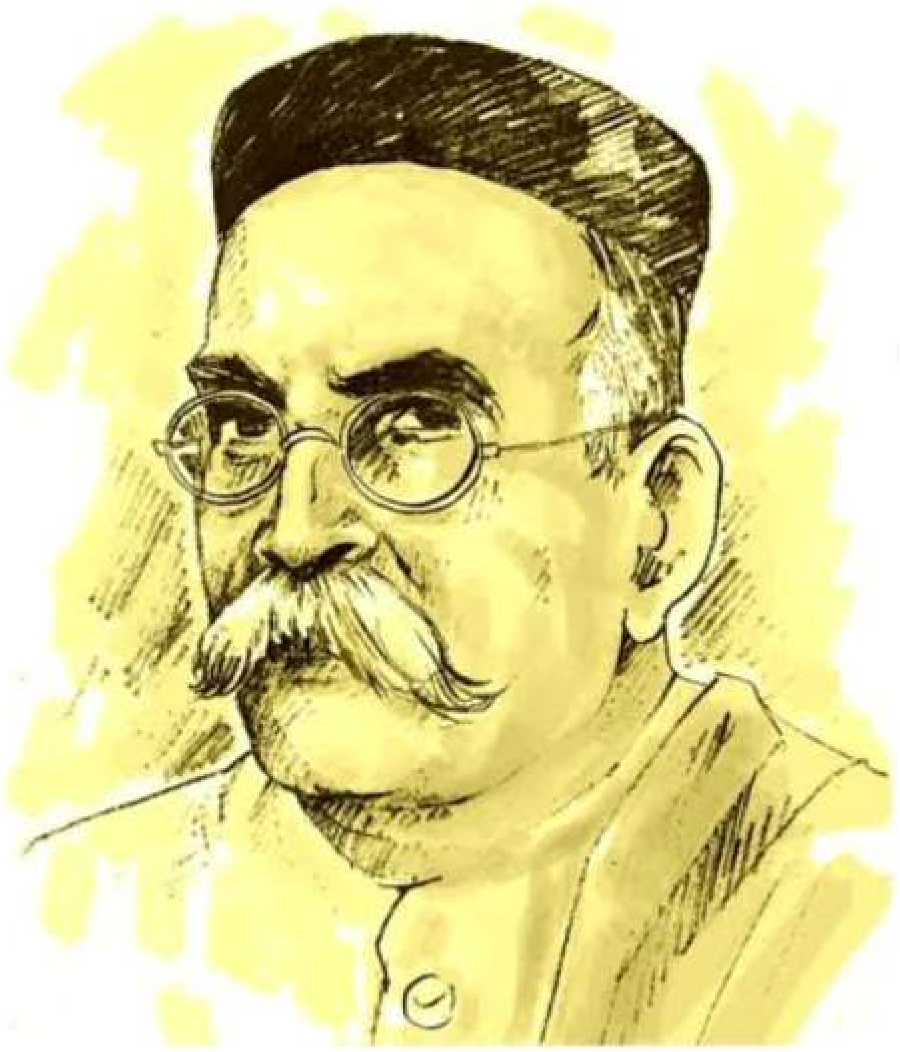

महावीर प्रसाद द्विवेदी

'आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं,
उसी तरह लिखा भी कीजिए;
भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए

हिंदी दिवस
14 सितम्बर

शाश्वत ऊर्जा
ENERGY FOR EVER

इरेडा
IREDA

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
Indian Renewable Energy Development Agency Ltd.
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान/A Govt. of India Enterprise)